

राजपत्र, हिमाचल प्रदेश

(असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्यशासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, शनिवार, 24 नवम्बर, 1990/3 श्रग्रहायण, 1912

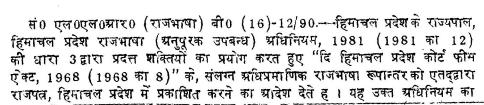
हिमाचल प्रदेश सरकार

विधि विभाग

(विधायी एवं राजभाषा खण्ड)

ग्रधिसूचना

शिमला-2, 1 ग्रगस्त, 1990



(2297)

मूल्य: 1 रुपया

राजभाषा (हिन्दी) में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा और इसके परिणामस्वरूप भविष्य में यदि उक्त प्रधिनियम में कोई संशोधन करना प्रनेक्षित हो, तो वह राजभाषा में ही करना ग्रनिवार्य होगा ।

> हस्ताक्षरित सचित्र ।

1968 47 8

हिमाचल प्रदेश न्यायालय फीस ग्रंधिनियम, 1968

हिमाचल प्रदेश राज्य में न्यायालय फीसों के उदग्रहण के लिए श्रीधनियम

भारत गणराज्य के उन्नीसब वर्ष में, हिमाचल प्रदेश विधान सभा द्वारा निम्नलिखित रूप में यह ग्राधनियमत हो:---

ग्रव्याय-1 प्रारंभिभक

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिया नाम हिमाचल प्रदेश न्यायालय फीस अधिनियम, 1968 है।

संक्षिप्त नाम विस्तार और प्रारम्भ ।

- (2) इसका विस्तार सम्पूर्ण हिमाचेल प्रदेश राज्य पर है।
- (3) यह तुरंन्त प्रवृत्तं होगा।
- 2. इस ग्रधिनियम में, जब तक कि सन्दर्भ से ग्रन्यथा श्रपेक्षित न हो,---

(क) "उच्च न्यायालय" से हिमाचल प्रदेश का उच्च न्यायालय प्रिमिप्रेत है ; (ख) "राजपत्त" से राजपत्त, हिमाचल प्रदेश स्रभिप्रेत है ;

परिभाषाएं।

- (ग) "राज्य सरकार" से हिमाचल प्रदेश सरकार प्रभिप्रेत है।

ग्रध्याय-2

उच्च न्यायालय में फीसें

3. वे फीसें, जो उच्च न्यायालय की लिपिकों ग्रीर ग्रधिकारियों की तत्समय संदेय हैं या उस न्यायालय में इस अधिनियम से उपाबद्ध प्रथम अनुसूची के संख्या 9 ग्रीर दितीय श्रमिसूची के संख्यांका। 7, 10, 11, 16 श्रीर 17 के अवीन प्रभार्य हैं, इसमें इसके पश्चात् बताई गई रीति से संग्रहीत की जायेगी।

उच्च न्याया-लय में फीसों का उदग्रहण।

- 4. इस अधिनियम से उपाबद्ध प्रथम या द्वितीय अनुसूची में फीसों से प्रभाय के रूप में विनिदिष्ट किस्मों में से किसी किस्म का कोई भी दस्तावेज, ऐसे उच्च न्यायालय के ममक्ष,---
 - (क) उसकी साधारण या ग्रसाधारण ग्रारम्भिक सिविल ग्रीधकारिता के प्रयोग
 - (ख) उसके अधीक्षण के अधीन न्यायालयों से अपीलों के बारे में उसकी अधि-कारिता के प्रयोग में:
 - (ग) निर्देश या पुनरीक्षण न्यायालय के रूप में उसकी अधिकारिता के प्रयोग में ;

उच्चं न्याया-लय में, उस-की साधारण या ग्रसाधा-रण ग्रधि-कारिता में फाईल किए गए दस्तावेजो श्रादि पर फीसें।

- (घ) भारतीय संविधान के प्रधीन निदेश, श्रादेश या रिट जारी करने की उसकी अधिकारिता के प्रयोग में; या
- (इ) किसी अन्य रीति से उसकी अधिकारिता के प्रयोग में ; श्राने वाले किसी मामले में ऐसे न्यायालय में फाईल, प्रदिशत या अभिलिखित या, ऐसे न्यायालय द्वारा प्राप्त की या दी न जायेगी जब तक कि ऐसे दस्तावेज के बारे में उक्त अनुसूचियों में से किसी में भी ऐसे दस्तावेज के लिए उचित फीस के रूप में उपदिशित फीस से ग्रन्यन फीस संदत्त न कर दी गई हो।
- फीस की
- 5 (1) जब उस अधिकारी के, जिसका कर्तव्य यह देखना है कि इस अध्याय के मावश्यकता अधीन कोई फीस दी जाए, और किसी वादकर्ता या मटर्नी के बीच फीस के संदाय की या रकम की आवश्यकता या उसकी रकम की वाबत कोई मतभेद पैदा होता है तो वह प्रश्न जब बाबतं मतभेद मतभेद उच्च न्यायालय में पैदा होता है विनिर्धारक ग्राधिकारी को निर्देशित किया होने की देशा जायेगा जिसका उस पर विनिध्चय तब के सिवाय अन्तिम होगा, जब कि प्रश्न उसकी में प्रक्रिया। राथ में सार्वजनिक महत्व का है, जिस दशा में उसे वह उच्च न्यायालय के मध्य न्याया-मृति को या उच्च न्यायालय के ऐसे न्यायाधीश को, जिसे मुख्य न्यायमति साधारणतया यो विशेषतया इस निमित्त नियक्त करेगा, म्रन्तिम विनिश्चय के लिए निर्देशित करेगा ।
 - (2) उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाम् ति यह घोषित करेगा कि उप-धारा (1) के प्रयोजन के लिए विनिधारक प्रधिकारी क्रीन होगा।

ग्रध्याय--3

ग्रन्य न्यायालयों में लोक कार्यालयों में फीसें

मुफस्सिल न्यायालयों में या लोक कार्यालयों में **फाई**ल किए गए दस्तावेजों श्रादि पर फीसें।

6. इस अधिनियम से उपाबद्ध प्रथम या द्वितीय अनुसूची में प्रभार्य के रूप में विनिर्दिष्ट किस्मों में से किसी किस्म का कोई भी दस्तावेज, किसी न्यायालय में फाईल, प्रदिशित या अभिलिखित नहीं किया जायेगा या किसी लोक अधिकारी द्वारा प्राप्त किया या दियां न जायेगा जब तक कि ऐसे दस्तावेज के बारे में उनत अनुसूचियों में से किसी में भी ऐसे दस्तावेज के लिए उचित फीस के रूप में उपदर्शित फीस से अन्यून फीस संदत्त न करदी गई हो।

कुछ वादों में सदेय फीसों ही संगणना ।

- 7. इसमें इसके ठीक पश्चात् वर्णित वादों में इस श्रधिनियम के ग्रधीन संदेय फीस की संगणना नीचे किखे अनुसार की जायेगीुल्ला का उपार का राजा है के व a gagagaran gagagan gari 💃 - 💰 an ara ara 🖟 agaran sa inggaran sa aranggaran sa ara
- (i) धन के वादों में.--धन के वादों में (जिनके अन्तर्गत नुकसानी या प्रतिकर के प्रथवा भर ण-पोषण, वार्षिकियों के या कालावधिक रूप से संदेय अन्य धनराशियों क बकाया क बाद भी हैं (दावाकृत रकम के अनसार):
- (ii) भरण-पोषण ग्रौर वाधिकियों के वादों में --- (क) भरण-पोषण ग्रौर वाधिकियों या कालावधिक रूप से संदेध ग्रन्थ धनराशियों के वादों में,---वाद की विषय वस्तु क मृत्य के अनुसार, और यह समझा जाएगा कि ऐसा मुख्य एक वर्ष के लिए संदेश दावाञ्चत रकम का दस गुणा है;

- (ख) भरण-पाषण ग्रीर वार्षिकियों या कालाविधिक रूप से संदेथ ग्रन्थ धनराशियों की कटौती ग्रथवा बढ़ौतरी के वादों में,—वाद की विषय वस्तु के मूल्य के ग्रनुसार ग्रीर यह समझा जायेगा कि ऐसा मूल्य एक वर्ष के लिये कम किए जानी वाली ग्रथवा बढ़ाई जाने वाली राशि का दम गणा है;
- (iii) बाजार मूल्य वाली अन्य जंगम सम्पत्ति के वादों में अधन से भिन्न जंगम सम्पत्ति के वादों में, जहां विषय-वस्तु का बाजार मूल्य है, वाद पत्न के पेण होने की तारीख पर ऐसे मूल्य के अनुसार ;
 - (iv) निम्न वादों में---

(क) बिना बाजार मूल्य की जंगम सम्पत्ति के वादों में,—जंगम सम्पत्ति के वादों में जहां विषय-वस्तु का बाजार मूल्य नहीं है, उदाहरणार्थ, हक सम्बन्धी दस्तार्वजों के मामले में ;

(ख) ग्रविभक्त कुटुम्ब की सम्पत्ति में ग्रंश के ग्रधिकार को प्रवर्तित कराने के वादों में, -- किसी सम्पत्ति में इस ग्राधार पर कि वह ग्रविभक्त कुटुम्ब की सम्पत्ति है, ग्रंश पाने के ग्रधिकार को प्रवर्तित कराने के वादों में:

(ग) घोषणात्मक डिकी और पारिणामिक अनुतोष के वादों में,—घोषणात्मक डिकी का आदेश अभिप्राप्त करने के वादों में, जहां पारिणामिक अनुतोष प्राधित है;

(घ) व्यादेश के वादों में, -- त्यादेश ग्रिभप्राप्त करने के वादों में ;

(ङ) सुखाचार के वादों में, --भूमि से उद्भूत होने वाले किसी लाभ के प्रधिकार (जिसके लिए इसमें प्रत्यथा उपबन्ध नहीं है) वादों में; ग्रौर

(च) लेखाओं के वादों में,—लेखाओं के वादों में; वादपत या अपील के जापन में किए गए इप्सित अनुताय के मूल्यांकन की रकम के अनुसार;

इन सभी वादों में वादी, इप्पित अनुताष मूल्यांकन की रकम का कथन करेगा:

परन्तु यह कि प्रत्येक मामले में न्यूनतम न्यायालय फीस तेरह रूपये होगीं:

परन्तु ग्रौर यह कि उप-खण्ड (ग) के ग्रधीन ग्राने वाले वाद में, उन मामलों में हि। पर इप्सित ग्रनुताष किसी सम्पत्ति के प्रति निर्देश में है, ऐसा मूल्यांकन इस धारा के पैरा (ए) में उपबन्धित रीति द्वारा संगणित सम्पत्ति के मूल्य से ग्रन्यून नहीं होगा।

(v) भूमि, गृहों ग्रौर उद्यानों के कब्जे के वादों में, ---भूमि, गृहों ग्रौर उद्यानों के कब्जे के वादों में विषय-वस्तु के मूल्य के प्रतुसार, ग्रौर यह समझा जायेगा कि ऐसा मल्य:---

जहां विषय वस्तु भूमि है, श्रौर——
(क) जहां भूमि, सरकार को वार्षिक राजस्व देने वाली सकल सम्पदा या
(क) जहां भूमि, सरकार को वार्षिक राजस्व देने वाली सकल सम्पदा या
सम्पदा का निश्चित ग्रंग है, या ऐसी सम्पदा का भाग रूप है ग्रौर
कलक्टर के रिजिस्टर में यह ग्रमिलिखित है कि उस पर ऐसा
राजस्व पृथकतः निर्धारित है, ग्रौर ऐसा राजस्व स्थायी रूप से
परिनिर्धारित है, वहां——ऐसे संदेय राजस्व का दस गुणा है;

(ख) जहां भूमि, सरकार को वार्षिक राजस्त्र देने वाली सकल सम्पदा या सम्पदा का निश्चित अंग है या ऐसा सम्पदा का भाग रूप है, ग्रीर यथा पूर्वोक्त ग्रमिलिखित है; ग्रौर ऐसा राजस्त्र परिनिर्धारित है किन्तु स्थायी रूप से नहीं, वहां⊸–इस प्रकार संदेय राजस्व का पांच गुणा है ;

- (ग) जहां भूमि, ऐसा कोई भी राजस्व नहीं देती है या ऐसे संदाय से भागतः छूट प्राप्त है या ऐसे राजस्व के बदले किसी नियत संदाय से भारित है, और वाद पत्र पेश उपस्थित करने की तारीख के ठीक पूर्व के वर्ष में उस भूमि से शुद्ध लाभ उदभूत हुए हैं, वहां -ऐसे शुद्ध लाभों का पंद्रह गुणा है; किन्तु जहां ऐसे कोई भी शुद्ध लाभ उस से उदभूत नहीं हुए हैं, वहां वह रकम है जो न्यायालय पेंड़ी की वैसी ही भूमि के मूल्य के प्रति निर्देश से उस भूमि के लिए प्राक्कलित करें:
- (घ) जहां भूमि सरकार को राजस्व देने वाली किसी सम्पदा का भाग है किन्तु ऐसी सम्पदा का निश्चित ग्रंश नहीं है ग्रौर यथापूर्वविणत पृथक है निर्धारित नहीं है, वहां उस भूमि का बाजार मूल्य है।

स्पष्टीकरण:--इस पैरा में यथा प्रयुक्त "सम्पदा" शब्द से झिभिप्रेत है वह भूमि जो राजस्व का संदाय करने के लिए दायी है जिसके लिए भू-स्वामीया कृषक या रैयत में सरकार से झलग वचनबद्ध निष्पादित किया है या जिस पर ऐसे वचनबद्ध के झभाव में राजस्व पृथकतः निर्धारित होता;

- (ङ) गृहों ग्रौर उद्योनों के वादों में,-- जहां विषय-वस्तु कोई गृह या उद्यान है, वहां उस गृह या उद्यान के बाजार मूल्य के श्रनुसार;
- (vi) णुफाधिकार का प्रवर्तन कराना.— शुफाधिकार प्रवर्तित कराने के वादों में उस भूमि, गृह या उद्यान जिसके बारे में अधिकार का दावा किया जाए इस धारा के पैरा (V) के अनुसार संगणित मृल्य के अनुसार ;
- (vii) भू-राजस्व के समनुदेशिति के हित के लिए,--भू-राजस्व के समनुदेशिति के हित के लिये वादों में--वाद पत्न के पेश किए जाने की तारीख के ठीक पहले के वर्ष के उस के इस प्रकार के शुद्ध लाभों का पन्द्रह गुणा।
- (viii) कुर्की ग्रपास्त कराना.—कुर्की ग्रपास्त कराने के वादों में,—भूमि की ग्रथवा भूमि में हित या राजस्व में कुर्की को ग्रपास्त कराने के वादों में,—-उस रकम के ग्रनुसार जिसके लिए वह भूमि या हित कुर्क किया गया था:

परन्तु जहां ऐसी रकम, उस भूमि या हित के मूल्य से अधिक है वहां फीस की रकम की संगणना ऐसे की जायेगी मानों वह दावा उस भूमि या हित के कब्जे के लिए हो ।

- (ix) मोचन के वादों में.— वन्धकदार के विरुद्ध बंधक सम्पत्ति के प्रत्युद्धरण के लिए वादों में,— बन्धक-पत्न द्वारा श्रीभव्यक्त प्रतिभूत मूलधन के आधे के अनुसार; पुरीबन्धित कराना,— श्रीर वन्धकदार द्वारा बंधक के पुरीबन्धित कराने के वादों में, या जेहां बंधक समते विकय द्वारा किया जाती है वहां विकय को श्रात्यंतिक घोषित कराने के वादों में, बन्धक-पत्न द्वारा श्रीभव्यक्त प्रतिभूत मूलधन के श्रनुसार।
 - (x) विनिर्दिष्ट पालन के लिये.—निम्नेलिखित विनिर्दिष्ट पालन के बादों में,—
 - (क) विकय की संविदा के वादों में,--प्रतिफल की रकम के अनुसार ;
 - (ख) बंधक की संविदा क बादों में, --करार में प्रतिभूत रकम के अनुसार ;

- (ग) पट्टे की संविदा के वादों में,—जुर्माता या प्रीमियम (यदि कोई हो) श्रीर श्रविध के पहले वर्ष के दौरान सदाय के लिए करार किए गए भाटक के योग की रकम के श्रवुसार;
 - (घ) पंचाट के वादों में विवादग्रस्त रकम या मम्पत्ति के मूल्य के ग्रनुसार ;
- (xi) भू-स्वामी ग्रौर ग्रिभिधारी के बीच.—-भू-स्वामी ग्रौर ग्रिमिधारी के बीच निम्नुलिखित वादों में:—
 - (क) अभिधारी से पट्टे का प्रतिलेख परिदत्त कराने के लिए;
 - (ख) अधिभोगाधिकार रखने वाले अभिधारी के भाटक की वृद्धि के लिए ;
 - (ग) भू-स्वामी से पट्टा परिदत्त कराने के लिए ;
 - (घ) अभिधारी से, जिसके अन्तर्गत अभिधृति के पर्यवसान के पश्चात् अभिधारण करने वाला अभिधारी आता है, स्थाव सम्पत्ति के प्रतियुद्धरण के लिए;
 - (ङ) बेदखली के नोटिस का प्रतिवाद करने के लिए ;
 - (च) उस स्थावर सम्पत्ति के ग्रधिभोग के प्रत्युद्धरण के लिए जिससे भूस्वामी ने किसी ग्रभिधारी को ग्रवैध रूप से बेदखल कर दिया है; ग्रौर
 - (छ) भाटक के उपशमन के लिए—वाद के पेश किए जाने की तारीख़ के ठीक पूर्ववर्ती वर्ष के लिए संदाय उस स्थावर सम्पत्ति के जिसमें प्रतिवाद में निर्देश है, भाटक की रकम के श्रनुसार।
- 8. भूमि का लोक प्रयोजनार्थ अर्जन करने के लिए तत्समय प्रवृत्त किसी अधिनियम के अधीन प्रतिकर सम्बन्धी अदिश के विरुद्ध अपील के जापन पर, इस अधिनियम के अधीन संदेय फीस की संगणना अधिनिणीत रकम और अपीलार्थी द्वारा दावाकृत रकम के बीच अन्तर के अनुसार की जायगी।

प्रतिकर सम्बन्धी ग्रादेश के विरूद ग्रपील के जापन पर फीस ।

9. यदि न्यायालय यह विचार करने का कारण देख कि धारा 7 के पैरा (v) श्रीर (vi) में यथावणित किसी ऐसी भूमि, गृह या उद्यान के वार्षिक शुद्ध लाभ या बाजार मूल्य का प्राक्कलन गलत तौर पर किया गया है तो उन में विणत किसी वाद में संदेश फीस की संगणना के प्रयोजनार्थ, न्यायालय, किसी उचित व्यक्ति को यह निदेश देने वाला कमीशन निकाल सकेगा कि वह आवश्यक ऐसे स्थानीय या अन्य अन्वेषण करे जो हो, श्रीर उस पर न्यायालय को रिपोर्ट दें।

शुद्ध लाभ या ब्राजार मूल्यके विनिश्चयन को शक्ति।

10. (i) यदि किसी ऐसे अन्वेषण के परिणामस्वरूप न्यायालय यह पाता है कि शुद्ध लाओं या बाजार मूल्य का प्राक्कलन गलत तौर पर किया गया है तो न्यायालय, यदि प्राक्कलन अत्याधिक हुआ है तो ऐसी फीस के रूप में संदत्त आधिक्य को स्विविवेका-नुसार वापस कर सकेगा, किन्तु यदि प्राक्कलन अपर्याप्त हुआ है तो न्यायालय वादी से अपेक्षा करेगा कि वह उतनी अतिरिक्त फीस दे जितनी उक्त बाजार-मूल्य या शुद्ध लाओं का प्राक्कलन सही तौर पर किए जाने पर संदेय होती।

प्रक्रिया जहां गुद्ध लाभ या बाजार मूल्य गलन तौर पर प्राक्तिलित हुम्रा है।

(ii) ऐसी दशा में बाद अतिरिक्त फीस संदत्त किए जाने तक रोक दिया जायेगा और यदि अतिरिक्त फीस, ऐसे समय के अन्दर जो न्यायालय नियत करेगा, संदत्त नहीं की जाती है तो वाद खारिज कर दिया जायेगा।

11. (1) प्रतःकालीन नाभों के लिए या स्थावर सम्पत्ति ग्रौर ग्रंत:कालीन लाभों श्रंतःकालीन लाभों या के लिए लेखा के लिए वादों में, यदि लाभ या डिकीत रकम दावाकृत लाभ मे या उस रकम से, जिस पर वादी ने इप्सित अनुतोष का मूल्यांकन किया है, अधिक है लेखां के लिए वादों में तो डिकी का निष्पादन तब तक नहीं किया जायेगा जब तक कि उचित प्रक्रिया, त्रिधिकारी को वह श्रन्तर संदत्त न कर दिया जाए, जो वस्तुतः **संदत्त** फीस ग्रौर संदेय उस फीस में है जो इस प्रकार डिकीत संपूर्ण लाभों या रकम के समावेण वाद में होने जब डिकीत रकम दावा-पर संदाय होती। कृत रकम सं (2) जहां अन्तः कालीन लाभ की रकम को अभिनिष्चित डिक्री के निष्पादन के श्रधिक है। दौरान के लिए छोड़ दिया जाता है वहां, यदि इस प्रकार प्रभिनिश्चित लाभ दावाकृत लाभों से ग्रधिक है तो डिकी का ग्रागे निष्पादन तब तक क लिए रोक दिया जायेगा जब तक कि वह मन्तर संदत्त नहीं कर दिया जाये जो वस्तुत: संदत्त फीस ग्रौर उस फीस में है जो ऐसे स्रिभिनिश्चित संपूर्ण लाभ का समावेश वाद में होने पर संदेय होती स्रौर यदि स्रतिरिक्त फीस उस समय के स्रन्दर जो न्यायालय नियत करेगा संदत्त नहीं की जाती है तो वाद खारिज कर दिया जायेगा।

मूल्यांकन 12. (1) वाद पत या ग्रापील के ज्ञापन पर इस ग्रध्याय के ग्रधीन प्रभार्य िकसी संबंधी प्रश्नों फीस की रकम के ग्रवधारण क प्रयोजनार्थ मूल्यांकन संबन्धी हर प्रश्न का विनिश्चय का उस न्यायालय द्वारा िकया जायेगा जिसमें, यथास्थिति, ऐसा वाद पत या ज्ञापन फाईल विनिश्चय । िकया जाता है ग्रीर जहां तक वाद के पक्षकारों का संबंध है, ऐसा विनिश्चय ग्रन्तिम होगा।

(2) किन्तु जब कभी ऐसा कोई वाद अपील, निर्देश या पुनरीक्षण न्यायालय के समक्ष आता है तब, यदि उस न्यायालय का यह विचार है कि उक्त प्रश्न का विनिश्चय गलत तौर पर किया गया है जिससे राजस्व का अपाय हुआ है तो, वह उस पक्षकार से, जिसने ऐसी फीस सदत्त की है, अपेक्षा करेगा कि वह उतनी श्रतिरिक्त फीस संदत्त करें जो उस प्रश्न का विनिश्चय सही तौर पर किए जाने पर संदेय होती और धारा 10 की उप-धारा (2) के उपबंध लागू होंगे।

19 0

ग्रंपील के 13. यदि ऐसी किसी श्रंपील या वाद पत्न जो सिविल प्रिक्तिया संहिता, 1908 जापर पर में विणत श्राधारों में से किसी श्राधार पर निचले न्यायालय द्वारा नामंजूर कर संदत्त फीम दिया गया है, ग्रहण कर लिए जाने का श्रादेश दिया जाता है या यदि श्रंपील में कोई की वापसी। वाद निचले न्यायालय द्वारा दोबारा विनिश्चय के लिए उसी संहिता की प्रथम श्रनुसूची के श्रादेश इकतालीस (41) नियम 23 के श्रंधीन प्रतिप्रेषित किया जाता है, तो श्रंपील न्यायालय, श्रंपीलार्थी को श्रंपील का एक प्रमाण-पत्न श्रनुदत्त करेगा जो श्रंपील के ज्ञापन पर संदत्त फीस को पूरी रकम कलक्टर से वापस पाने के लिए उसे प्राधिकृत करेगा:

परन्तु यदि श्रपील में, प्रतिप्रेषण की दशा में, प्रतिप्रेषण का आदेश वाद की संपूर्ण विषयवस्त के लिए नहीं है तो इस प्रकार अनुदत्त प्रमाण-पत्न अपीलार्थी को, विषयवस्तु के उस भाग या उन भागों पर, जिनके बारे में वाद प्रतिप्रषित किया गया है, मूलतः संदेय फीस से अधिक फीस पाने के लिए प्राधिकृत न करेगा ।

निणय के

14. जहां निर्णय के पुनर्विलोकन के लिए ग्रावेदन, डिकी की तारीख से नड़बवें दिन
पुनर्विलोकन पर या तत्पश्चात् पेश किया जाता है वहां न्यायालय, तब क सिवाय जब कि विलम्ब
के लिए ग्रावेदक की ढिलाई से कारित हुमा है, उसे स्वविवेकानुसार एक प्रमाण-पत म्रनुदत्त
श्रावदन पर कर सक्गा जो उसे ग्रावेदन कर संदत्त फीस में से उतनी फीस कलक्टर से वापस पान
फीस की के लिए प्राधिकृत करेगा, जितनी उस फीस से ग्रधिक है जो ग्रावदन के ऐसे दिन के पूर्व
वापसी। पेश किए जाने की दशा में संदेय होती।

15. जहां निर्णय के पुनिविलोकन के लिए आविदन ग्रहण कर लिया जाता है, ग्रीर जहां, पुनः मुनवाई पर न्यायालय ग्रयते पूर्व विभिन्नय को विधि या तथ्य की भूल के आधार पर उलट देता है या उपांतिरत कर देता है वहां आविदक न्यायालय में एक प्रमाण-पन्न पाने का हकदार होगा जो उसे आविदन पर संदत्त फीस में से उतती फीस कलक्टर से वापस पाने के लिए प्राधिकृत करेगा जितनी उस फीस से अधिक है जो ऐसे न्यायालय में दिए गए किसी ग्रन्थ आविदन पर इस अधिनियन के दितीय अनुसूची के संख्यांक 1 के खण्ड (ख) या खण्ड (घ) के अर्धान संदेय होतो:

जहां न्यायालय अपना
पूर्व विनिश्च य
भूल के
श्राधार पर
उलट देता है
या उपांतरित
कर दता है
वहां फीस
की वापसी।

किन्तु, इस धारा के पूर्ववर्ती भाग की कोई भी वात त्रावेदक को ऐसे प्रमाण-पव का हकदार नहीं बनायेगी, जहां उलटाव या उपांतरण, पूर्णतः या भागतः ऐसे नए साक्ष्य के कारण होता है, जो स्रारंभिक सुनवाई में पेश किया जा सकता था।

वाहुल्यपूर्ग वाद।

16. जहां वाद में दो या अधिक सुस्पब्ट विषय समाविष्ट हैं वहां वाद पत्न या अपील के ज्ञापन पर ऐसे विषयों में से हर एक का अलग-अलग समावेश करने वाले वादों में वाद-पत्नों या अपील के ज्ञापनों पर इस अधिनियम के गर्धान दायी फीसों के योग की रकम प्रभार्य होगी।

इस धारा के पूर्ववर्ती भाग की कोई भी बात सिविल प्रक्रिय संहिता की प्रथम अनुसूची के ग्रादेश 11 नियम 6, द्वारा प्रदत्त शक्तियों पर प्रभाव डालने वाली नहीं सनजी जायेगी ।

17. जब ऐसे व्यक्ति की, जो संदोष परिरोध या संदोप अवरोध के अपराध का, या ऐसे किसी भी अपराध से, जिसके लिए पुलिस अधिकारी वारण्ट के बिना गिरफ्तार कर सकते हैं, भिन्न किसी अपराध का परिवाद करता है और जिसने पहले ही कोई ऐसी अर्जी पेश नहीं की है जिस पर इस अधिनियम के अधीन फीस उद्गृहीत की गई है, प्रथम या एक भाग परीक्षा दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898 के उपबन्धों के अधीन लेखबढ़ की जाए तब परिवादी एक रुपये पच्चीस पैसे की फीस का संदाय करेगा जब तक कि न्यायालय ऐसे संदाय का परिहार करना ठीक नहीं समझता है।

898 का 5

परिवादियों की लिखित परीक्षा।

18 इस अधिनियम में अन्तर्विष्ट कोई भी बात निम्नलिखित दस्तावेजों को किसी फीस से प्रभार्य नहीं बनायेगी :---

कतिषय दस्तावेजों की छूट ।

- (i) संघ के किसी भी सशस्त्र वलों में से किसी के ऐसे सदस्य द्वारा जो सिविल नियोजन में नहीं है, वाद सस्थित करने के लिए प्रतिरक्षा करने के लिए निष्पादित मुख्तारनामा ।
- (ii) वाद की प्रथम सुनवाई के पश्चात् न्यायालय द्वारा मांगे गए लिखित कथन।
- (iii) वसीयत का प्रोवेट या प्रशासनपत्न जहां सम्पत्ति का मूल्य या रकम जिसके बारे में वसीयत का प्रोवेट या प्रशासन-पत्न अनुदत्त किया जायेगा, एक हजार रुपये से अनिधिक है।
- (iv) कलक्टर या भू-राजस्व का व्यवस्थापन करने वाले अन्य अधिकारी या राजस्व बोई या त्रायुक्त को भूमि के निर्धारण या उस पर अधिकार या उसमें के हित के अभिनिष्चित किए जाने से संबद्ध मामलों में संबंध में दिया गया ग्रावेदन या त्रजी, यदि वह आवेदन या अर्जी ऐसे व्यवस्थापन के प्रनितम पृष्टीकरण के पहले पेश की गई है।

(v) सिचाई के लिए सरकार जल के प्रदाय के सम्बंध में आवेदन ।

(vi) खेती का विस्तार करने या भूमि के त्याग करने की इजाजत के लिए भू राजस्व के किसी अधिकारी के समक्ष ऐसे व्यक्ति द्वारा, जो सीधे सरकार से किए गए वचनबध के अधीन ऐसी भूमि का धारक है जिसका राजस्व परिनिर्धारित तो है किन्तु स्थायी रूप से नहीं, पेश किया गया आवेदन।

(vii) भूमि के त्याग के लिए या भाटक का वृद्धि के लिए दी गई सूचना की तामील के लिए आवेदन।

(viii) ग्रमिकर्ता को करस्यम करने का प्राधिकार।

(ix) साक्ष्य देने या दस्तावेज पेश करने के लिए हाजिर होने के लिए किसी साक्षी या अन्य व्यक्ति को समन करने के लिए, या ऐसे प्रदर्श को, जो ऐसा श्विथपत्न नहीं है जो न्यायालय में पेश किए जाने के आसन्न प्रयोजन के लिए तैयार किया गया है, पेश या फाईल करने के बारे में प्रथम अवदेन (जो उस याचिका से सिन्न है जिसमें अपराधिक आरोप या इतला अन्तविद्ध है)।

(X) दाण्डिक मामलों में जमानतनामें, श्रिभयोजन करने या साध्य देने के लिए मुचलके और स्वीच उपसजाति के लिये या श्रन्य वातों के लिए मुचलके।

(xi) किसी अपराध के बारे में पुलिस अधिकारी को या उसके समक्ष प्रस्तुत, पेण किए जाने वाले या रखे जाने वाली याचिका, आवेदन, आरोप या इत्तला ।

(xii) कैदी या अन्य व्यक्ति द्वारा जो विवाध्यता के या किसी न्यायालय या उसके अधिकारियों के अवरोध के अधीन है, याचिका।

(Xiii) लोक सेवक, (भारतीय दण्ड संहिता, 1860 में यथा परिभाषित) नगरपालिका अधिकारी, या किसी रेल कम्पनी के अधिकारी या सेवक का परिवाद।

186

1872

15.

45

(xiv) सरकार द्वारा श्रावेदक को शोध्य धन के संदाय के लिए श्रावेदन।

(XV) सरकारी वनों में काष्ट काटने की अनुज्ञा के लिए या ऐसे वनों से अन्यथा संबद्ध आवेदन।

(XVI) किसी नगरपालिका कर के विरुद्ध भ्रपील की याचिका।

(XVII) लोक प्रयोजनों के लिए संपत्ति के अर्जन से संबंधित तत्समय प्रवृत्त विधि के अधीन प्रतिकर के लिए आवेदन।

(xviii) इडियन किश्चियन मैरिज ऐक्ट, 1872 की धारा 45 ग्रौर 48 के ग्रधीन याचिकार्ये।

ग्रध्याय-4

प्रोवेट, प्रशासनपत्र और प्रशासन-प्रमणपत्र

जहां बहुत ग्रधिक न्यायालय फीस संदत्त की गई हो वहां श्रवमुक्ति।

19. जहां वसीयत के प्रोबेट के लिए या प्रशासन-पत्न के लिए आवेदन करते समय किसी व्यक्ति ने मृत्तक की सपत्ति का प्राक्कलन उस मूल्य से, जो तत्पश्चात् साबित होता है, अधिक पर किया है और परिणामस्वरूप उसने उसपर बहुत अधिक न्यायालय फीस संदत्त की है, वहां, यदि उस सपत्ति के सही मूल्य के अभिनिचण्यन के छः मास के अन्दर ऐसा व्यक्ति,---

(क) उस स्थानीय क्षेत्र के, जिसमें प्रोबेट या प्रशासन-पत्न अनुदत्त किया गया है, मुख्य नियन्त्रक राजस्व प्राधिकारी के समक्ष वह प्रोबेट या प्रशासन-पत्न पेश करता है;

(ख) ऐसे प्राधिकारी का मृतक की सपत्ति की शपथ पत्न या प्रतिज्ञान द्वारा सत्यापित,

(ग) यदि ऐसे प्राधिकारी का समाधान हो जाता है कि प्रोबेट या प्रशासन पत्न पर, विधि दारा प्रपेक्षित से प्रधिक फीस सदत्त की गई थी, तो वहां उक्त प्राधिकारी—

(क) प्रोबेट या प्रणासन-पत्र पर के स्टांप को, यदि वह पहले ही रद्द न किया

जा चुका हो, रद्र कर सकेगा;

(ख) उस पर जो न्याशलय फीन दी जानी चाहिये थी, उसे सूचित करने के लिए, अन्य स्टांन प्रतिस्थापित कर सकेगा; और

(ग) स्विविवेकानुसार, उनके प्रस्तर का सदाय वैसे ही श्रनुज्ञात कर सकेगा जैसे खराब हुए स्टम्पों की दणा में किया जाता हैया उसका प्रतिसदाय धन के रूप में कर सकेगा।

20. जब कभी धारा 19 में निदिष्ट प्राधिकारी की समाधानप्रद रूप में यह साबित कर दिया जाता है कि निष्पादक या प्रशासक ने मृत्तक द्वारा शोध्य ऋणों की इतनी रकम चुकाई है जो संपदा की रकम या मृत्य में से काटी जाने पर, उसे घटाकर इतनी धनराशि कर देती है कि यदि वह सपदा की पूरी सकल रकम या उसका पूरा सकल मृत्य होती तो उस तंपदा के बारे में अनुदत्त प्रोबेट या प्रशासन-पत्न पर इस अधिनियम के अधीन उस पर वास्तव में दी गई फीस से कम फीस संदत्त करनी पड़ती, तब ऐसा प्राधिकारी उस अन्तर को वापस कर सकेगा, परन्तु यह तब जब कि उसका दावा ऐसे प्रोबेट या प्रशासन-पत्न की तारीख के पश्चात तीन वर्ष के भीतर किया जाए।

किन्तु जब, किसी विधिक कार्यवाही के कारण मृत्तक द्वारा शोध्य ऋण अभिनिध्चित या संदत्त नहीं किए गए हैं या उसकी चीजबस्त प्रत्युद्धत नहीं हुई है, ग्रौर उपलब्ध नहीं हुई है, ग्रौर उपलब्ध नहीं हुई है, ग्रौर उसके परिणामस्वरूप निष्पादक या प्रशासक ऐसे ग्रन्तर की वापसी का दावा उक्त तीन वर्ष की श्रविध के श्रन्दर करने से निवारित हो गया है तब उक्त प्राधिकारी ऐसा दावा करने के लिए ऐसा श्रतिरिक्त समय श्रनुज्ञात कर सकेगा जो उन परिस्थितियों में युक्तियुक्त प्रतीत हो।

21. (1) जब कभी संपदा की संपूर्ण संपत्ति के बारे में प्रोबेट या प्रणासन-पन्न का अनुदान किया जा चूका है जा किया जाता है और इस अधिनियम के अधीन उस पर प्रभाय पूरी फीस है या दी जाती है, तब इस अधिनियम के अधीन कोई फीस प्रभाय नहीं होगा जम्पदा की सम्पूर्ण सम्पत्ति या उसके भाग के बारे में वैसा ही अनुदान किया जा

(2) जब कभी ऐसा अनुदान किसी सम्पत्ति के बारे में किया जा चुका है या किया जाता है, जो किसी सम्पदा की भागभूत है, तो इस अधिनियम के अधीन वस्तुतः संदत फीस की रकम सब काट ली जायेगी जब उसी संपदा की समरूप संपत्ति या उसमें सम्मिलित सम्पत्ति जिसके

संबंध में पूर्ववर्ती अनुदान है वैसा ही अनुदान किया जाता है।

22 किसी मृत व्यक्ति की वसीयत का प्रोबेट या उसकी चीजवस्तु का प्रशासन-पत्न जो इसके पहले या इसके पश्चात् अनुदत्त होता है विधिमान्य समझा जायेगा और ऐसी किसी जंगम या स्थावर संपत्ति के, जिस पर मृतक का कन्जा या हक, पूर्णत: या भागत: न्थासी के रूप में था, प्रत्युद्धरण, अन्तरण या समनुदेशन के लिए उसके निष्पादकों या प्रशासकों द्वारा काम में लाया जा सकेगा यद्यपि ऐसी सम्पत्ति की रकम या मूल्य संपदा की रकम या मूल्य में सम्मिलित नहीं किया गया है जिसके बारे में न्यायालय फीस ऐसे प्रोबेट या प्रशासन-पत्न पर दी गई थी।

जहां वे ऋण जो मृत व्यक्तिद्वारा शोध्य थे उसकी संपदा में से चुकाएं गए हैं वहां प्रवमुक्ति।

ग्रनेक ग्रनु-दानों की दशा में ग्रवमुक्ति ।

न्यास संपत्ति के बारे में प्रोबेटों की विधि मान्यता की घोषणा यद्यपि वह संपत्ति न्याया लय फीस देने में सम्मिलित नहीं की गई है।

उस ६शा के लिए उपवन्ध जब प्रोबेट **म्रादि पर** बहुत कम न्यायालय फीस संदत्त की गई है।

23 जहां किसी व्यक्ति ने प्रोबेट या प्रशासन पत्र के लिए आवेदन करते समय मृतक की संपदा का प्राक्कलन उस मूल्य से जो तत्पश्चात् सावित होता है, कम पर किया है श्रौर परिणामस्वरूप उसने उस पर बहुत कम न्यायालय फीस संदत्त की है वहां उस स्थानीय क्षेत्र का, जिसमें प्रोबेट या प्रशासन-पत्र अनुदत्त किया गया है, मुख्य नियन्त्रक राजस्व प्राधिकारी, शपथपत्र या प्रतिज्ञान द्वारा मृतक की सम्पदा के मूल्य का सत्यापन किए जाने पर ग्रौर उस सम्पूर्ण न्यायालय फीस का जो उस पर ऐसे मूल्य के बारे में मूलतः संदत्त की जानी चाहिये थी उस प्रतिरिक्त शास्ति सहित संदाय किए जाने पर जो ऐसी उचित न्यायालय फीस की पांच गुनी होगी जब प्रोबेट या प्रशासन-पत्न के अनुदान की तारीख से एक वर्ष के भीतर पेश कियाँ जाता है, ग्रौर उस दशा में बीस गुनी होगी, जब वह उस तारीख से एक वर्ष के पश्चात् पेश किया जाता है, ऐसे प्रोबेट या प्रशासन-पत पर मूलतः संदत्त न्यायालय फीस बिना किसी कटौती किए जाने पर प्रोबेट या प्रशासन पत को सम्यक रूप से स्टाम्पित करा सकेगा.

परन्तु यदि आवेदन, संपदा का सही मूल्य अभिनिष्टिय के और इस तथ्य का कि प्रोबेट या प्रशासन पत्र पर आरम्भ में बहुत कम न्यायालय फीस संदत्त की गई थी, पता लगने के पश्चात् छह मास के भीतर किया जाता है ग्रौर यदि उक्त प्राधिकारी का समाधान हो जाता है कि ऐसी फीस भ्ल के या उस समय यह ात कि सम्पदा का कोई विशिष्ट भाग मृतक का था, ज्ञात न होने के परिणामस्वरूप, ग्रौर कपट करने के ग्राशय से या उचित न्यायालय फीस के संदाय में विलम्ब करने के आशय के बिना, संदत्त की गई थी तो उक्त प्राधिकारी उक्त शास्ति का परिहार कर सकेगा, श्रौर जो फीस उस पर श्रारम्भ में संदत्त की जानी चाहिए थी उसे पूरा करने में जिलनी कमी है केवल उसी के संदाय पर प्रोबेट या प्रशासन-पत्र को सम्यक् रूप से स्टांपित करा सकेगा।

धारा 23 के सन पत स्टांपित किए जाने के पहले प्रशासक का का उचित प्रतिभृति

देना।

का पता

24. उस प्रशासन-पत्न की दशा में जिस पर आरम्भ में बहुत कम न्यायालय फीस संदत्त की गई है, उक्त प्राधिकारी से 5.23 में निर्दिष्ट रीति में सम्यक् रूप से स्टांपित तब तक नहीं करायेगा जब तक प्रशासक उस न्यायालय को जिसने प्रशासन-पन्न अनदत्त किया है ऐसी प्रतिभूति नहीं दे देता है जैसी यदि मृतक की संपदा का संपूर्ण मृत्य उस समय ग्रिभिनिश्चित हो जाता तो विधि के ग्रनुसार उसके ग्रनुदान के समय दी जानी चाहिये थी ।

न्यून संदाय 25 जहां किसी भूल के या उस समय यह बात कि संपदा का कोई विशिष्ट भाग मृतक का था, जात ने होने के परिणास्वरूप किसी प्रोबंट या प्रणासन-पत्न पर बहुत कम न्यायालय फीस संदत्त की गई है, वहां, यदि ऐसे प्रोबेट या प्रशासन-पत्न के ब्रधीन कार्य करने वाला कोई निष्पादक या प्रशासक, भूल का या उस चीजवस्त का, जिसका मृतक की संपत्ति होना उस समय ज्ञात नहीं था, पता लगने के पश्चात्, छह मास के भीतर उक्त प्राधिकारी को आवेदन नहीं करता है और उस फीस की कमी को पूरा करने के लिए जो ऐसे प्रोबेट या प्रशासन-पत्र पर श्रारम्भ में दी जानी चाहिये थीं सदाय नहीं करता है तो उसको एक हजार रुपये की धनराशि ग्रौर उतनी ग्रितिरिक्त धनराशि जो उचित न्यायालय में फीस की कमी के दस प्रतिशत के बराबर हो, जायेगी ।

लगने के छह मास के भीतर निष्पा-दन ग्रादि का प्रोबेट ग्रादि पर पूर्ण न्यायालय फीस का मुदाय न करना।

प्रोबेट या

त्रशासन-पत्न

के म्रावेदनों की सूचना

का राजस्व

प्राधिकारियों को दिया

जाना ग्रौर

उस पर

प्रक्रिया ।

- 26. (1) जहां प्रोबेट या प्रशासनपत्न के लिए भावेदन उच्च न्यायालय से भिन्न, किसी न्यायालय को किया जाता है वहां न्यायालय ग्रावेदन की सूचना कलक्टर को दिलायेगा ।
 - (2) जहां यथापूर्वोक्त स्रावेदन उच्च न्यायालय में किया जाता है वहां उक्त न्यायालय उस अविदेन की सूचना मुख्य नियन्त्रक राजस्व प्राधिकारी को दिलायेगा।
- (3) वह कलक्टर जिसकी राजस्त्र ग्रिधिकारिता की स्थानीय सीमाग्रों के भीतर मृतक की संपत्ति या उसका कोई भाग है, किसी भी समय, किसी ऐसे मामले के, जिसमें प्रोबेट या प्रशासन-पत्न के लिए ग्रावंदन किया गया है, ग्रीभलेख का निरीक्षण कर या करा सकेगा और उसकी प्रतिलिपियां लेया लिवा सकेगा, ग्रीर यदि ऐसे निरीक्षण पर या अन्यथा, उसकी यह राय है कि ग्राजींदार ने मृतक की सपदा का मूल्य ग्रावंप्राक्तितित किया है तो यदि कलक्टर, यह ठीक समझता है तो वह ग्राजींदार से (स्वयं या ग्राभिकर्ता द्वारा) हाजिर होने की ग्रापेक्षा कर सकेगा ग्रीर साक्ष्य ले सकेगा ग्रीर मामले की ऐसी रीति से जांच कर सकेगा जैसी वह ठीक समझता है, ग्रीर यदि, फिर भी उसकी राय है कि संपत्ति का मूल्य ग्रावंप्राक्तिलित किया है तो वह ग्राजींदार से मूल्यांकन को संशोधित करने की ग्रापेक्षा कर सकेगा।
- (4) यदि अर्जीदार मूल्यांकन को, ऐसे संशोधित नहीं करता है कि कलक्टर का उससे समाधान हो जाए तो जिस न्यायालय के समक्ष प्रोबेट या प्रशासन-पत्न के लिए ब्राबेदन किया गया था उससे उस संपत्ति के सही मूल्य की जांच करने के लिए कलक्टर समावेदन कर सकेगा:

1925新 39 परन्तु भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 की धारा 317 द्वारा अपेक्षित तालिका के प्रदर्शन की तारीख से छह मास के अवसान के पश्चात ऐसा कोई भी समावेदन नहीं किया जायेगा।

- (5) यथापूर्वोक्त आवेदन किए जःने पर, न्यायालय तदनुसार जांच करेगा/करायेगा आरे यथाशक्य निकटतम सही मूल्य का, जो मृतक की सम्पत्ति का प्राक्कलित किया जाना चाहिए था, निष्कर्ष, अभिलिखित करेगा और कुलैक्टर जांच का पक्षकार समझा जायेगा।
- (6) उप-धारा (5) के अधीन किसी ऐसी जांच प्रयोजनों के लिए न्यायालय या वह व्यक्ति जो जांच करने कलिए न्यायालय द्वारा प्राधिकृत किया गया है, प्रोबेट या प्रशासन-पत्न के अर्जीदार की परीक्षा (चाहे स्वयं या कमीशन द्वारा) शन्य पर कर सकेगा और ऐसा अतिरिक्त साक्ष्य ले सकेगा जो संपत्ति के सही मूल्य को लाबित करने के लिए पेश किया जाए और ऐसा व्यक्ति अपने द्वारा लिए गए साक्ष्य न्यायालय को वापिस कर देगा और जांच के परिणाम की रिपोर्ट देगा और ऐसी रिपोर्ट तथा इस प्रकार लिया गया साक्ष्य, कार्यवाही में साक्ष्य होंगे और न्यायालय, तब के सिवाय जब कि उसका वह समाधान हो जाता है कि रिपोर्ट गनत है, रिपोर्ट के अनुसार निष्कर्ष अभिलिखित करेगा।
- (7) उप-धारा (5) के अधीन अभिलिखित न्यायालय का निष्कर्ष अन्तिम होगा किन्तु उसके कारण धारा 23 के अधीन किसी आवेदन का मुख्य नियन्त्रक राजस्य प्राधिकारी द्वारा ग्रहण किया जाना और निपटाया जाना वर्जित न होगा।
- (8) राज्य सरकार उपन्धारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने में कलैक्टरों के मार्गदर्शन के लिए नियम बना सकेगी।

प्रोबेट ग्रीर प्रशासन-पत्र के बारे में न्याया य फीस का संदाय।

- 27 (1) अर्जीदार को प्रोबेट या प्रशासन पत के अनुदान का हकदार बनाने वाला कोई भी आदेश, ऐसे अनुदान के लिए किये गए आवेदन पर तब तक नहीं किया जायेगा जब तक अर्जीदार न्यायालय में सम्पत्ति का मूल्यांकन तृतीय अनुसूची में उपविणित रूप म फाईल नहीं कर देता है, और न्यायालय का समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसे मूल्यांकन पर प्रथम अनुसूची के संख्यांक 9 में विणित फीस का सदाय हो गया है।
- (2) कलैक्टर द्वारा धारा 26 की उप-धारा (4) के अधीन किए गए किसी समावेदन के कारण प्रोवेट या प्रणासन-पन्न के अनुदान में कोई विलम्ब नहीं किया जायेगा।

शास्तियों श्रादि की वसूली।

- 28. (1) धारा 26 की उप-धारा (6) के ग्रधीन की गई जांच पर जितनी ग्रधिक फीस संदेय पाई गई है उसे ग्रौर धारा 25 के ग्रधीन कोई शास्ति या समगहरण की, मुख्य नियन्त्रक राजस्व प्राधिकारी के प्रमाण पत्न पर, किसी भी कुलक्टर द्वारा निष्पादक या प्रशासक से ऐसे वसूल किया जा सकेगा मानों वह राजस्व का बकाया हो।
- (2) मुख्य नियन्त्रक राजस्व प्राधिकारी यथापूर्वोका ऐसी किसी शास्ति या समपहरण का ग्रथवा धारा 23 के ग्रधीन शास्ति का कोई भाग् या धारा 23 के ग्रधीन किसी न्यायालय फीस का, जो उसे पूरी न्यायालय फीस से जिसका संदाय किया जाना चाहिए था, ग्राधिक है, पूर्णत: या भागत: परिहार कर सकेगा।

प्रोबेटों या प्रणासन-पत्नों को धारा 6 ग्रौर 37 का लाग् न होना।

29. धारा 6 या धारा 37 में की कोई भी बात प्रोबेटो या प्रशासन पत्नों को लाग् नहीं होगी।

ग्रध्याय-5

ग्रादेशिका फीसें

ग्रादेशिकाग्रों के खर्च के बारे में

नियम ।

- 30. (1) उच्च न्यायालय, यथाशक्याशीम्न, निम्नलिखित बाती के लिये नियम बनायेगा :---
 - (क) ऐसे न्यायालय द्वारा अपनी अपीर्ला अधिकारिता में निकाली गई और ऐसी अधिकारिता को स्थानीय सीमाओं के भीतर स्थापित अन्य सिविल न्यायालयों हारा निकाली गई आदिशिकाओं की तामील और निष्पादन के लिए प्रभार्य फीसें

(ख) ऐसी सीमाग्रों के भीतर स्थापित दण्ड न्यायण्लयों द्वारा उन अपराधों के मामले में जो अपराधों से भिन्न है जिनके लिए पुलिस अधिकारी वारंट के बिना गिरफ्तार कर सकते हैं. निकाली गई आदिशिकाश्रों की तामील और

🧮 निष्पादन के लिए प्रभार्य फीसें; तथा

- (ग) उस व्यक्ति और अन्य सब व्यक्तियों का पारिश्रमिक जो न्यायालय की इजाजत से आदिशिकाओं की तामील या निष्पादन में नियोजित है।
- (2) उच्च-स्यायालय उप-धारा (1) के ग्रधीन बनाए गए नियमों में, समय-समय पर परिवर्तन ग्रौर परिवर्धन कर सकेगा।

- (3) उप-धारा (1) के प्रधान बनाए गए सब नियम और उप-नियम (2) के प्रधीन किए गए सब परिवर्तन और परिवर्धन, राज्य सरकार द्वारा पुट्ट किए जाने के पश्चात् राजपत्न में प्रकाशित किए जायेंगे और तर्रुपरि उन्हें विधि का बल प्राप्त होगा।
- (4) जब तक इस धारा के ग्रधीन, कोई नियम बनाए ग्रौर प्रकाणित न किए जाए तब तक ग्रादेशिकाग्रों की तामील ग्रौर निष्पादन के लिए इस ग्राधिनयम के प्रारम्भ से ठीक पूर्व उद्ग्रहणीय फीसें उद्गृहीत की जाती रहेगी ग्रौर इस ग्रधिनियम के ग्रधीन उद्ग्रहणीय फीसें समझी जायेंगी।
- 31 (1) धारा 30 या तद्धीन बनाए गए नियमों में किसी बात के होते हुए भी, तिम्नलिखित की ग्रीर से ग्रादेशिकाग्रों की तामील ग्रीर निष्पादन के लिए कोई फीस प्रभारित नहीं होगी:—

कतिपय ग्रादेशिकाम्रों के लिए छूट ।

(क) लोक अधिकारी द्वारा अपनी पदीय हैसियत में कार्य करते समय, प्रस्तुत सूचना या परिवाद पर किन्हों दाण्डिक कार्यवाहियों म अभियोजन ; तथा

(ख) हिमाचल प्रदेश सहकारी समिति श्रधिनियम, 1956 के ग्रधीन नियुक्त सामियक प्रथवा मध्यस्थ।

(2) राज्य सरकार, राजपत्न में स्रधिसूचना द्वारा यह स्रवधारित कर सकेगी कि कौन व्यक्ति उप-धारा (1) के प्रयोजनार्थ लोक स्रधिकारी समझे जायेंग।

32. स्रादेशिकास्रों की तामील स्रौर निष्पादन के लिए प्रभार्य फीसें दिशत करने वाली एक सारणी संग्रेजी भाषा में स्रौर देशी भाषास्रों में, प्रत्येक न्यायालय के सहजदृश्य भाग में स्रभिदिशित की जायेगी।

त्रादेशिका फीस की सारणियां।

33 (1) उच्च-स्यायालय द्वारा बनाए गए और राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित नियमों के अधीन रहते हुए, प्रत्येक जिला न्यायाधीश और प्रत्येक जिला मजिस्ट्रेट अपने स्यायालय से तथा अपने अधीनस्थ न्यायालयों में से प्रत्येक से निकाली गई आदिशिकाओं की तामील और निष्पादन के लिए नियोजित किए जाने के लिए आवश्यक चपड़ासियों की संख्या नियत करेगा और उसमें समय-समय पर परिवर्तन कर सकेगा।

जिला भ्रौर स्रधीनस्थ न्यायालयों में चपरासियों की संख्या।

1887 का 9

1956 का 23

(2) प्रान्तीय लघुनाद न्यायालय अधिनियम, 1887 की धारा 5 के अधीन स्थापित प्रत्येक लघुनाद न्यायालय, इस धारा के प्रयोजन के लिए जिला न्यायाधीश के न्यायालय के अधीनस्थ समझा जायेगा।

ग्रध्याय-6

फीसों के उद्ग्रहण के ढंग के विषय में

34 धारा 3 में निर्दिष्ट या इस अधिनियम के अधीन प्रभार्य सब फीसें स्टाम्पों द्वारा संप्रहीत की जायेंगी:

परन्तु यदि, यथास्थिति, पीठासीन न्यायाधीश या कार्यालय के ग्रध्यक्ष ग्रथवा उच्च-न्यायालय की दशा में ऐसे न्यायालय का किसी न्यायम्ति का यदि समाधान हो जाता है, कि स्टांपित होने वाले दस्तावेज को फाईल करने वाले दिन न्यायालय फीस स्टांप, स्टांप विकेता के पास उपलब्ध नहीं है तो वह ग्रादेश दे सकेगा कि न्यायालय फीस किसी भी सरकारी कोष में नकद रूप में संग्रहीत की जाए ग्रौर उसकी रसीद या चालान उसके प्रभारी स्टाप द्वारा फीसों का संग्रहण । अधिकारी द्वारा सम्यक् मण से दिया जायेगा, श्रौर ऐसी कोई रसीद या चालान इस अधिनियम तथा तद्धीत नियमों के प्रयोजन के लिए प्रयोग किया जा शक्रेगा, मानों कि रसीद या चालान संदत्त राणि पर, सरकार द्वारा इस ग्रधिनियम के ग्रधीन सम्यक् रूप से जारी किए गए स्टाम्प थे।

स्टापों का छापित या श्रासजक होना। 35. इस अधिनियम के अधीन प्रभार्य किसी फीस को द्योतन करने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले स्टांप छापित या श्रासंजक अथवा भागत: छापित और भागत: प्रासंजक होंगे जैया राज्य सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा समय-समय पर निर्देश दे।

स्टांपों क संदाय, संख्या नवीकरण श्रीर लेखे रखे जाने के लिए नियम । 36. (1) राज्य सरकार, निम्नलिखित के विनियमन के लिए, समय-समय पर नियम वना सकेगी---

(क) इस अधिनियम के अधीन उपयोग में लाए जाने वाले स्टांपों का प्रदाय,

(ख) इस ग्रधिनियम के ग्रधीन प्रभायं फीस का द्योतन करने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले स्टांपों की सख्या;

(ग) नुकसानग्रस्त या खराब हुए स्टांपों का नवीकरण ; ग्रीर

(घ) इस अधिनियम के अधीन उपयोग में लाए गए सब स्टांपों का लेखा रखना:

परन्तु उच्च न्यायालय में धारा 3 के ग्रधीत उपयोग में लाए गए स्टांपों की दशा में ऐसे नियम उप न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति की सहमित से बनाए जायेंगे।

(2) उप-धारा (1) के प्रधीन बनाए गए सब नियम राजपत्र में प्रकाणित किए जायेंग, ग्रीर तदुपरि उन्हें विधि का बन प्राप्त होगा।

श्रनवधानता से लिए वस्तावेजों 37. कोई भी दस्नावेज जिस पर इस अधिनियम के अधीन स्टांप होना चाहिए विधिमान्य नहीं होगी यदि और जब तक कि वह उचित रूप से स्टांपित नहीं है:

वस्तावेजों का स्टांपित किया जोना ।

किन्तु यदि ऐसा कोई दस्तावेज भूल या अवधानता से किसी न्यायालय या कार्यालय में ले लिया जाता है, फाईल कर लिया जाता है या उपयोग में लाया जाता है तो, यथास्थिति, पीठासीन न्यायाधीश या कार्यालय का प्रधान या उच्च-न्यायालय की दशा में ऐसे न्यायालय का कोई भी न्यायाधीश, यदि वह ठीक समझे तो, आदेश दे सकेगा कि ऐसी दस्तावेज उसके निदेशानुसार स्टांपित की जाए, और ऐसी दस्तावेज के तदनुसार स्टांपित हो जाने पर वह तथा उससे संबंधित हर कार्यवाही वैसे ही विधिमान्य होगी मानी वह आरम्भ में ही उचित रूप से स्टांपित थी।

संशोधित दस्तावेज । 38. जहां ऐसी कोई दस्तावेज केवल भूल का सुधार करने ग्रौर उसे पक्षकारों के मूल ग्राणय के श्रनुरूप बनाने के उद्देश्य से संशोधित की जाती है वहां उस पर नया स्टांप ग्रिधरोपित करना ग्रावण्यक न होगा।

स्टांप का रद्द किया जाना। 39. कोई भी दस्तावेज जिस पर इस ग्रधिनियम के ग्रधीन स्टांप ग्रपेक्षित है किमी भी न्यायालय या कार्यालय में, जब तक स्टांप रह नहीं कर दिया जाए तब तक न तो फाईल की जायेगी ग्रौर न उस पर कार्रवाई की जायेगी।

(2) ऐसा अधिकारी जिसे त्यापालय या कार्यातय का प्रधान समय-समय पर नियुक्त करे, ऐसे किसी दस्तावेज की प्राप्ति पर, तुरन्त उसका रद्धकरण उसके चित्र-शीर्ष को ऐसे पंच करके करगा कि स्टाप पर प्रमिहित उमका मूल्य प्रष्ठूता रहे ग्रौर पंच करने से निकला भाग जना दिया जायगा या प्रन्यथा नष्ट कर दिया जायेगा।

ग्रध्याय-7

प्रकोर्ण

40. जब कभी पीठासीन न्यायाधीश की राय में दण्ड न्यायालय में किसी ऐसी दस्तावेज का, जिसके बारे में उचित फीस संदत्त नहीं की गई है, फाईल या प्रदिश्ति किया जाना न्याय की निष्फलता के निवारण के लिए ग्रावश्यक है, तब धारा 4 या धारा 6 में ग्रन्तिंबष्ट कोई भी बात ऐसे फाईल, या प्रदिश्तित किए जाने का प्रतिशेष करने वाली न समझी जायेगी।

दांडिक मामलों में ऐसी दस्ता-वेजों का ग्रहण किया जाना जिनके लिए उचित फीस संदत्त नहीं की गई है।

41. (1) राज्य दैंसरकार, इस अधिनियम के अधीन उपयोग में लाए जाने वाले स्टांपों के विकय के विनियमन के लिए, उन व्यक्तियों के लिए जिनके द्वारा ऐमा विकय किया जायेगा और ऐसे व्यक्तियों के कर्तव्यों और पारिश्रमिक के लिए समय-समय पर नियम बना सकेगी।

स्टांपों का विकय ।

- (2) ऐसे सब नियम राजपत्न में प्रकाशित किए जायों गे ग्रौर तदुपरि उन्हें विधि का बल प्राप्त होगा ।
- (3) स्टांप बेचने के लिए नियुक्त किया गया कोई व्यक्ति जो इस धारा के अधीन बनाए गए किसी नियम की अबजा करेगा, और ऐसे नियुक्त न किया गया कोई व्यक्ति जो स्टांप बेचेगा या विकय के लिए प्रस्थापित करेगा, कारावास से, जिसकी अबिध छह मास तक की हो सकेगी, या जुर्माने से, जो पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, या दोनों से, दिण्डत किया जायेगा।
- 42. राज्य सरकार इस अधिनियम से उपाबद्ध प्रथम या द्वितीय अनुसूची में विणित सभी फीसें या उनमें से किसी को भी हिमाचल प्रदेश संघ राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्र में या उसके किसी भाग में समय-समय पर राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, कम कर सकेगी या परिहार कर सकेगी और उसी रीति से ऐसे आदेश को रद्द कर सकेगी या उसमें फेरफार कर सकेगी।

फीस को कम करने या उसका परिहार करने की शक्ति।

- 43 इस अधिनियम के अध्याय (2) और (6) की कोई भी बात उन फीसों को जिन्हें उच्च-न्यायालय का कोई अधिकारी अपने नियत संबलग के अितरिक्त प्राप्त करने के लिए अनुज्ञात है, लागू नहीं होगी।
- 44 संघ राज्य क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में, भारत सरकार गृह मंत्रालय की ग्रधिसूचना संख्या जी-एस-ग्रार-517/[एफ-4/4/63-य0टी0 एल0-65] तारीख 19 मार्च, 1964

उच्च न्याया-लय कं कुछ प्रधिकारियों की फीसों में व्यावृत्ति । निरसन ग्रौर व्यावृत्ति । हारा यथाविस्तारित है न्यायालय फीस अधिनियम, 1870 और पंजाब पुर्नगठन अधिनियम, 1966 की धारा 5 के अधीन उस संघ राज्य क्षेत्र में अन्तरित क्षेत्रों में यथा लागू न्यायालय फीस अधिनियम, 1870 का एतद्द्वारा निरसन किया जाता है: 1870 का 7 1966 का 31 1870 का 7

रचित्र फीम

परन्तु ऐसा निरसन निम्नलिखित को ही प्रभावित न करेगा :--

- (क) उक्त अधिनियनों का पूर्व प्रवर्तन या उसके अधीन सम्यक रूप से की गई या सहन की गई कोई बात ; या
- (ख) उक्त अधिनियमों के अधीन अजित, प्रोदभूत, या उपगत कोई अधिकार, विशेषाधिकार, बाध्यता का दायित्व; या
- (ग) उक्त नियमों के विरुद्ध किए गए किसी अपराध के बारे में उपगत कोई शास्त्रित समपहरण या दण्ड ; अथवा
- (घ) यथापूर्वोक्त किसी अधिकार, विशेषाधिकार, बाध्यता, दायित्व, शास्ति, समप-हरण या दण्ड के बारे में कोई अन्वेषण, विधिक कार्यवाही या उपचार;

ग्रौर ऐसा कोई घन्वेषण, विधिक कार्यवाही या उपचार संस्थित, चालू या प्रवितित किया जा सकेगा ग्रौर ऐसी कोई शास्ति, समपहरण या दण्ड इस प्रकार ग्रिधरोपित किया जा सकेगा मानों कि उक्त ग्रिधिनियम निरिस्ति नहीं किए गर्ये थे।

इस ग्रधि-नियम के प्रारम्भ से पर्व गांस्थत कुछ वादों का ग्रधिग्रहण ।

Timbia.

- 45. (1) धारा 44 के अधीन निरित्ति अधिनियमों में किसी बात के होते हुए भी, मई, 1967 क प्रथम दिन को या उसके पश्चात् संस्थित और इस अधिनियम के प्रारम्भ से ठीक पूर्व उच्च न्यायालय में, उसकी सामान्य भूल सिविल अधिकारिता के आधार पर और उसके प्रयोग में लिन्दित बादों या अन्य कार्यवाहियों में फीस उद्गृहीत की जाएयी मानों की यह अधिनियम उन तारीखों की प्रवृत्त या जिनकी ऐसी कार्यवाहियां संस्थित की गई थीं।
- (2) उच्च-न्यायातय के समक्ष उसकी सामान्य भूल सिविज अधिकारिता के आधार पर ग्रीर उसके प्रयोग में मई, 1967 के प्रथम दिन को या उसके पश्चात् संस्थित किय गय तथा अधिनियम के प्रारम्भ से पूर्व नियटाए गए वादों या अन्य कार्यवाहियों में उद्गृहीत कोई फीस, विधि अनुसार उद्गृहीत की गई समझी जायेगी।

श्रनुसूची-1

(धारा 3 देखिए) मूल्यानुसार फीसें

44.65	ા(વર્ષ		जायत फास
1	2	3	4
1.		जब रकम या विवादग्रस्त विषय वस्तु का मूल्य पांच रुपये से श्रधिक नहीं है ।	पचास पैसे
	मुजराई या प्रतीपदावा का अभि-	जब ऐसी रकम या मूल्य पांच रुपये से अधिक है, तब पांच रुपये से ऊपर क, हर पांच रुपय या उसके	पचास पैसे
	नहीं है) या प्रत्याक्षप का ज्ञापन ।	जब ऐसी रकम या मूल्य सौ रुपये से ग्रधिक है, किन्तु पांच सौ रुपये	एक रुपया

से ग्रिधिक नहीं है, तब एक सौ रुपये से ऊपर के हर दस रुपये या उसके भाग पर पांच सौ रुपये तक। जब ऐसी रकम या मूल्य पांच सौ रुपये से ग्रधिक है तब हर दस रुपये या उसके भाग पर, एक हजार रुपयं तक।

एक रूपया पचास पैसे।

जब ऐसी रक्षम या सूल्य एक हजार रुपये से अधिक है, तब एक हजार रु ये के ऊपर, हर एक सी रुपये या उसके भाग पर, पांच हजार रुपये तक। जब ऐसी रकम या मूल्य पांच हजार

बारह रुपये बीस पैसे।

रुपये से अधिक है, तब पांच हजार रुपये के ऊपर हर दो सौ रुपये या उसके भाग पर, पांच हजार रुपये तकः।

चौबीस रुपये चालीस वैसे।

जब ऐसी रकम या मूल्य दस हजार छत्तीस रुपये रुपये से अधिक है तब दस हजार पचास पैसे। रुपये के ऊपर, हर पांच सौ रुपये या उसके भाग पर, बीस हजार रुपये तक।

जब ऐसी रकम याम्लय बीस हजार रुपये से अधिक है तब बीस हजार रुपये के ऊपर, हर एक हजार रुपये या उसके भाग पर, तीस हजार हजार रुपये तक।

ग्रड़तालीस रुपये ग्रस्सी पैसे ।

जब ऐसी रकम या मूल्य तीस हजार हजार रुपये से यधिक है तब तीस हजार रुपये के ऊपर, हर दो हजार रुपये या उसके भाग पर, पच्चास रुपये तक ।

*-*ग्रड्त⊺लीस रुपये ग्रस्सी पैसे ।

जब ऐसी रकम या मूल्य पचास हजार रुपये से अधिक है तब पचास हजार रुपये के ऊपर, हर पांच हजार रुपये या उसके भाग पर।

ग्रडतालीस रुपये ग्रस्सी पैसे।

2. विनिर्दिष्ट प्रनुतोष ग्रधिनियम, 1963 (1963 का 47) की धारा 6 के ग्रधीन कब्जे के बाद में वादपत्र।

पूर्वगामी माप-मान में विहित रकम की ग्राधी फीस ।

3. निर्णय के पुनर्विलोकन के लिए यावेदन, यदि वह डिकी की तारीखं वादपत्र या ग्रपील के से नब्बवें दिन या तत्पश्चात् उप-स्थापित किया गया है।

- 4. निर्णय के पुनविलोकन के लिए ग्रावेदन, यदि वह डिक्री की तारीख से नब्बवे दिन के पहले उपस्थापित किया गया है।
- 5. निर्णय की या ऐसे आदेश की, जो डिकी नहीं है या जिसे डिकी का बल प्राप्त नहीं है, प्रतिलिपि ।

- 6. डिकी या डिग्री के बल वाले म्रादेश की प्रतिलिपि।
- 7. भारतीय स्टाम्प ग्रधिनियम, 1899 (1899 का 2) के ग्रधीन स्टाम्प शल्क के लिए दायी किसी दस्तावेज की प्रतिलिपि । जब वह वाद या कार्यवाही के किसी पक्षकार द्वारा भूल के स्थान पर वापिस ली जाए परन्तु यह तब जब ऐसी प्रतिलिपि भारतीय स्टाम्प ग्रिधिनियम, 1899 (1899 का 2) के ग्रधीन किसी शल्क के लिए दायी न हो ।

वाही या ग्रादेशकी प्रतिलिपि, जिनके लिए इस ग्रधिनियम द्वारा ग्रन्थथा उपबंध नहीं किया गया है, या किसी सिविल या दाण्डिक या राजस्व न्याया-लय या कार्यालय से या किसी खण्ड के कार्य पालक प्रशासन का भार साधन करने वाले मुख्य प्रधिकारी के कार्या-लय से ली गई किसी लेखा, विवरण, रिपोर्ट या एसे ही ग्रन्य दस्तावेज की प्रति लिपि।

ज्ञापन पर उद्ग्रहणीय फीस । वादपत या ग्रपील क जापन पर उदग्रहणीय फीस ग्राधी ।

रुपये

जब ऐसा निर्णय या ऋदिश उच्च एक रुपया न्यायालय से भिन्न किसी सिविल न्या- पच्चीस पैसे। न्यायालय द्वारा या किसी राजस्व न्यायालय या कार्यालय के पीठा-सीन ग्रधिकारी द्वारा या किसी ग्रन्य न्यायिक या कार्यपालक ग्रधि-कारी द्वारा पारित किया गया है। जब ऐसा निर्णय का श्रादेश उच्च दो रुपये न्यायालय द्वारा पारित किया गया है। पैंसठ पैसे। जब ऐसी डिकी या ग्रादेश उच्च दो न्यायालय से भिन्न किसी सिविल पैंसठ पैसे। न्यायालय द्वारा या किसी राजस्व न्यायालय द्वारा किया गया है। जन ऐसी डिकी या ब्रादेश उच्च पांच रुपये पच्चीस पैसे। न्यायालय द्वारा किया गया है। (क) जब कि भूल पर प्रभार्य स्टाम्प भूल गुल्क पचहत्तर पैसे से अधिक है। प्रभार्य शतक।

(ख) किसी अन्य दशा में। एक रुपया।

8. ऐसी राजस्व या न्यायिक के कार्य- प्रति तीन सौ साठ शब्दों या उनके पैंसट पैसे। भागके लिए।

का ग्रहाई

या ऐसे मुख्य

का

तीन

मवा

प्रति-

3 9. बिल का प्रोबेट या प्रशासन-पत्न जब वह रकम या उस सम्पत्ति का ऐसी रकम मुल्य जिसके बारे में प्रोबेट या या ऐसे मूल्य चाहे विल उपाबद्व हो या नहीं। प्रशासन पत्र अनुदत्त किया जाता है, एक हजार रुपये से अधिक है किन्तू दस हजार से अधिक नहीं है जब ऐसी रकम या ऐसा मूल्य दस ऐसी रकम हजार रुपये से अधिक है किन्तु पचास हजार रुपये से ग्रधिक नहीं

> शत जब ऐसी रकम या ऐसा मूल्य ऐसी पचास हजार रुपये से ग्रधिक है। या मत्य का चार प्रति-शत:

परन्तु जब सम्पदा में सम्मिलित किसी सम्पत्ति के वारेमें भारतीय उत्तरा-धिकार अधिनियम, 1925 (1925 का 39) के अधीन या मुबई संहिता के 1827 के विनियम संख्यांक VIII के प्रधीन प्रमाण पत्र अनुदत्त किए जाने के पण्चात् उसी संपदा के बारे में प्रोबेट या प्रणासन पत्न अनुदत्त किया जाता है तब पश्चात्वर्ती अनुदान के बारे में संदेय फीस में से उस फीस की रकम घटा दी जाएगी जो पूर्ववर्ती ग्रनुदान के बारे में संदत्त की गई है।

10. भारतीय उत्तराधिकार ऋधिनियम, किसी भी मामले में। 1925 (1925 का 39) के अधीन प्रमाण-पत्न ।

उस ऋधि-की नियम 374 धारा ग्रधीन प्रमाण-पत्न में विनिद्धिट ऋण प्रतिभृति की रकम म्लय या ग्रढाई का प्रतिशत ग्रीर उस ऋण या प्रतिभूति की रकम मूल्य जिस

या का

पर

प्रमाण-पत्र का विस्तार

तियम की धारा 376 के प्रधीन किया जाता है जार प्रतिका । टिप्पण:—(1) ऋण की रकम, जिस के अन्त-गंत व्याज आता है, वह रकम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मिलत करने के लिए प्रावेदन किया जाता है, वह रकम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मिलत करने के लिए प्रावेदन किया जाता है, वह रकम अभिनिश्वत की जा सकती है। (2) नाहे प्रमाण-पत्न में विनिद्धिद किसी प्रतिभृति के बारे में कोई णिवत अधिनियम के प्रधीन प्रदेश की गई है वहां चाहे वह भक्त प्रतिभृति के बारे में कोई णिवत अधिनियम के प्रयोग प्रदेश की गई हो या नहीं, और जहां ऐसी णिवत इस प्रकार प्रदेश को गई है वहां चाहे वह भक्त प्रतिभृति पर ब्याज या जाता जा प्रत्क करने के लिए हो या प्रतिभृति को परकायण या अंतरण करने के लिए हो या प्रतिभृति को प्रमाण-वि में सम्मिलत करने के लिए हो या प्रतिभृति को प्रमाण-वि में सम्मिलत करने के लिए हो या प्रतिभृति को प्रमाण-वि में सम्मिलत करने के लिए हो या प्रतिभृति को प्रमाण-वि में सम्मिलत करने के लिए सा प्रतिभृति को प्रमाण-वि में सम्मिलत करने के लिए सा प्रतिभृति को प्रमाण-वि में सम्मिलत करने के लिए सा प्रवेश की प्रभाव जे का स्थान किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रवेग (न्वापालय) जा थे, त्र क्ष रक्ष या विवादाग्रस्त दो रुप्ये पैसठ विषय अधिक ते वि स्था सा स्वत्त है। प्रावेशन के लिए सा दिमाचल प्रयेग अधिक है। पर उद्मुहणीय आयुक्त के न्यायालय में उसकी पुत्तीक्षण प्रधि- फीस । कार्या के सिल् प्रतिभित्त का प्रवेश के सिल् प्रवेशन के न्या सा किया के सिल् प्रतिभित्त का प्रवेश के सिल् प्रवेशन प्रवेशन के नित्तीय पच्चीक्षण की के सिल् प्रवेश के सिल् प्रवेशन के नित्तीय पच्चीक्षण की किया जा के सिल् प्रवेशन के नित्तीय पच्चीक्षण हो है। या प्रवेशन के सिल् प्रवेशक है । यह उद्युहणीय आयुक्त के न्या विषयवस्तु का मृत्य किन तिम्मिलिखित से अधिक है । यह उद्युहणीय का सिल की स्था के सिल् किए जाने पर मृत्यानुसारी उद्युहणीय की सिल देश पर सारणी जब रक्ष या विषयवस्तु का मृत्य किन तिम्मिलिखित से अधिक है । यह उपवे परि सारणी किया के सिल किए जाने पर मृत्यानुसारी उद्युहणीय की सिल देश पर सिल किए जाने पर मृत्यानुसारी उद्युहणीय की सिल देश पर सिल किया जा किया किया किया किया किया किया किया किय	2318 ग्रसाधारण राजपत्र, हिमाच	ल प्रदेश, 24 नवम्बर, 199 <i>0</i> /	3 अग्रह(वण , 1912
नियम की धारा 376 की प्रधान किया जाता है जार प्रतिका । विष्या जाता है जार प्रतिका । विष्या जाता है, जह रकम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए आवेदन किया जाता है, जहां तक वह रकम अर्थानिक्वत की जा सकती है। (2) जाहे प्रमाण-पत्न में विनिर्दिष्ट किसी प्रतिभाति के बारे में कोई णक्ति अधिनियम के प्रधीन प्रदत्त की गई हो या नहीं, प्रीर जहां ऐसी णिकत इस प्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिकार परकामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभाति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभाति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को परकामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभाति का मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न में सिम्मिलित करने के लिए प्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य प्रभितिष्टित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्वायालय) आरेण, जब रक्तम या विवादाश्रस्त दो रुपये पैसठ विवाद प्रस्ति के प्रयोग के लिए या दिमाचल प्रदेश की बीदारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य चन्ची पैसी रुपये के स्वात जिल के प्रयोग के लिए प्रावेदन । 12. इसकी प्रमाण-पत्न में प्रमाण-पत्न में सम्मिलत करने के लिए या दिमाचल प्रदेश की बीदारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य क्रिकील के जापन 63 के अधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीम रुपये अधिक है। पर उद्युहणीय आयुक्त के न्यायावय में उसकी प्रतिक्षण अधि- फीस । 13. कारिता हे प्रयोग के लिए आवंदन । 14. वार्वे के सिस्त किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्युहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्य निम्निलिखित से अधिक उचित फीस नहीं है 1 2 3 इपये क्षये क्षये रुपये रुपये	1 2	3	4
हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरोश, 1948 के पराश्वल प्रदेश के प्रशीन किया जाता है, जार प्रतिशत । हमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरोश हो। हमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरोश हमाण-पत्र में तिमाचल करने के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो। या दोनों प्रयोग के लिए हो। या दोनों प्रयोग के लिए हो। या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोग के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोग के लिए प्रयोग के लिए हो या देश हो या दोनों पर उदमुहणीय आयुक्त के त्यायालय में उसकी पुनरीक्षण अधि- फीस । कारिता हे प्रयोग के लिए आवुक्त । यह स्वाप्ता पर प्रयोग के लिए आवुक्त । वह सित किस			
के अधीन किया जाता है लिया जाता है जा किया जाता है, वह रकम है जो उस दिन है जब हुए को प्रमाण-पब में सिम्मिलित करने के लिए प्रावेदन किया जाता है, वह रकम है जो उस दिन है जब हुए को प्रमाण-पब में सिम्मिलित करने के लिए प्रावेदन किया जाता है, जहां तक वह रकम अभिनिश्चित की जा सकती है। (2) जाहे प्रमाण-पन में बिनिंदिष्ट किसी प्रतिभूति के बारे में कोई जािकत अधिनियम के अधीन प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह गिया नहीं, और जहां ऐसी जािकत इस प्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह गिया नहीं, और जहां ऐसी जािकत इस प्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह गिया वानों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभूति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पन में सम्मिलित करने के लिए हो या वोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभूति को प्रमाण-पन में सम्मिलित करने के लिए हो या वोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभूति को प्रमाण-पन में सम्मिलित करने के लिए हो या वोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभूति को प्रमाण-पन में सम्मिलित करने के लिए प्रावेदन किया जाता है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पन में सम्मिलित करने के वह मूल्य अभिनिश्चत किया जा सकता है। जब रक्त प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश अभिन हिमाचल प्रवेश के प्रयोग के लिए प्रावेदन श्रावेदन के स्थाया लिय में उसकी प्रयोग के लिए प्रावेदन । विषय वस्तु का मूल्य प्रयोल के जापन 63 के प्रधीन हिमाचल प्रदेश के विद्या पच्चीस रुपये प्रधिक है। पर उदगुहणीय आयुक्त के स्थाया लय में उसकी प्रवेशिण प्रधि- फीस । कारिता के प्रयोग के लिए प्रावेदन । वादों के सस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गुहणीय फीसों को दरों पर सारणी जब रक्त या विषयवस्तु का मूल्य किला निम्निलिखित से अधिक है नहीं है 2 उ			
विषय जाता है वार प्रतिकान । टिप्पणः— (1) ऋण की रक्तम, जिस के प्रतिकान । टिप्पणः— (1) ऋण की रक्तम, जिस के प्रतिकान । उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मितित करने के लिए आवेदन किया जाता है, वह रक्तम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मितित करने के लिए आवेदन किया जाता है, वहां तक वह रक्तम प्रभितिश्वत की जा सकती है। (2) वाहे प्रमाण-पत्न में विनिर्देश्य किसी प्रतिकृति के वारे में कोडे शक्ति अधितयम के ग्रधीन प्रदर्श की गई है वहां वाहे वह शक्ति प्रतिकृति कहां ऐसी शक्ति इस प्रकार प्रदर्श की गई है वहां वाहे वह शक्ति प्रतिकृति कहां ऐसी शक्ति इस प्रकार प्रदर्श की गई है वहां वाहे वह शक्ति प्रतिकृति का ग्रद्ध करने के लिए हो या दीनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिकृति का प्रपाल-पत्न में सम्मितित करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिकृति को प्रमाण-पत्न में सम्मितित करने के लिए प्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूच्य ग्रधीनिश्वत किया जा सकता है। जब रक्त या जा-पत्न में उपकी प्रक्रित को प्रमाण-पत्न में सम्मितित करने किए प्रावेदन किया जा सकता है। जब रक्त या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ विवय वस्तु का मूच्य पत्न पैसी। क्यायक्त के त्यावालय में उपकी प्रतिकृति की श्राय किया जा सकता है। जब रक्त प्रतिकृति की प्रमाण-पत्न के प्रयालय में उपकी प्रतिकृति की श्राय के लिए प्रावेदन किया जा सकता है। व्यय वस्तु का मूच्य पत्न के न्यावालय में उपकी प्रतिकृति की श्राय के सिर्त किए ग्रावेदन किया जा रेस सिर्त का विवय वस्तु का मूच्य किया के सिर्त किए जावेद किए जावेद के सिर्त किए जावेद किए			
है जार प्रशिक्षा । टिप्पण:—(1) ऋण की रकम, जिस के जनत- गीत व्याज आता है, वह रकम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए आवेदन किया जाता है, जहां तक वह रकम अभिनिश्चित की जा सकती है। (2) जाहे प्रमाण-पत्न में विनिद्धिष्ट किसी प्रतिभूति के बारे में कोई णिवित अधिनियम के अधीन प्रदत्त की गई है बहां चाहे वह शक्ति प्रपतिभूति पर व्याजया लालांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए होया दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रति- भूति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए होया दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रति- भूति का मूल्य अस्ति उसका उस दिन का बाजार मूल्य अस्ति उसका उस दिन का अप्राण्य स्थान के लिए हो या प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए स्रायदेव किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य अभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेण, 1948 के पैराग्राफ 35 के ब्राधीन उच्च न्याया- लक्ष में उसकी ब्रिक्शिरिता ने प्रयोग के लिए स्रायदेव किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य अभिनिश्चत किया जा सकता है। जब रकम या विवाद प्रस्त है। पर उद्गृहणीय आयुक्त के न्यायालय संस्कित का पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विवाद वस्तु का मूल्य किन्तु तिम्निलिखित से अधिक उच्चित फीस निम्निलिखित से अधिक है 1 2 3 हिपये कपये हथ्य हिपये हथ्य	-		
विष्पणः—(1) ऋण की रकम, जिस के ब्रन्त- गैत ब्याज आता है, वह रकम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए झावेदन किया जाता है, जहां तक वह रकम श्रीभिविष्यत की जा सकती है। (2) नाहे प्रमाण-पत्न में विनिदिष्ट किसी प्रतिभृति के वारे में कोई शक्ति अधिनियम के प्रधीन प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिभृति को नाई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिभृति पर ब्याजया लाभांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति को परक्रामण या श्रीरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रति- भृति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य उसका जस दिन का व्याद्यतिक्या जाता है जहां तक कि वह मूल्य श्रीभिविष्ठता किया जा सकता है। जब रकम या विवादाशस्त दो रुपये पैसठ वियय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। रुपये से अधिक नहीं है। पर उद्युहणीय श्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण प्रधि- कारिता के प्रयोग के लिए आवंदन। वारों के सिस्त किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्युहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्य नहीं है 1 2 3 हपये हपये हपये हपये हपये हपये हपये हपये			
टिप्पणः—(1) ऋण की रक्म, जिस के अन्त- गंत ब्याज आता है, वह रकम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पव में सम्मिलत करने के लिए आबंदन किया जाता है, जहां तक वह रकम अभिनिश्चित की जा सकती है। (2) चाहे प्रमाण-पव में विनिद्धिट किसी प्रतिभृति के बारे में कोई शक्ति अधिनियम के प्रधीन प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिभृति पर ब्याजया लाआंश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दिन का बाजार मृत्य उसका उस दिन का बाजार मृत्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलत करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दिन का बाजार मृत्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलत करने के लिए प्रावदन किया जाता है जहां तक कि वह मृत्य प्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेण, 1948 के पैराग्राफ 35 के अधीन उच्च त्याया- लय में उसकी प्रश्चित को प्रयोग के लिए पा ब्रिमाचल प्रदेश की प्रमाम सुधार प्रधिनियम, 1972 (1974 का 8) की बारा जब ऐसी रक्म या मृत्य प्रपील के जापन दिज के अधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये अधिक है। पर उद्मुहणीय आयुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण अधि- फीस । कारिता के प्रयोग के लिए आवंदन । वारों के सिस्त किए जाने पर मृत्यानुसारी उद्गुहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्म या विषयवस्तु का मृत्य किन्तु निम्निलिखित से अधिक उचित फीस नहीं है 1 2 3 हपये हपये एय 5 0.50			प्रतिशत ।
गत व्याज आता है, वह रकम है जो उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पद्म में सम्मिलत करने के लिए आवेदन किया जाता है, जहां तक वह रकम अभिनिश्चित की जा सकती है। (2) चाहे प्रमाण-पद्म में विनिर्दिष्ट किसी प्रतिभृति के बारे में कोई शक्ति अधिनियम के प्रधीन प्रदर्श की गई है वहां चाहे वह शक्त प्रतिभृति पर ब्याजया लाभांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या प्रंतरण करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या प्रंतरण करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या प्रंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का परक्रामण या प्रंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का मुख्य उसका उस दिन का बाजार मृख्य है जब प्रतिभृति को परक्रामण या प्रंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का परक्रामण या प्रंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए प्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूख्य प्रभितिश्वत किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश प्रवित्त के प्रयोग के लिए प्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह सूख्य प्रभितिश्वत किया जा सकता है। 12. विभावल प्रदेश अधिकारिता के प्रयोग के लिए प्रवेदन स्वाप पच्ची पैसे। 13. हिमाचल प्रदेश अभिग्नत प्राप्त में सुण्य पच्ची प्रयोग के लिए प्रावेदन । 14. विभावल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस स्पये प्रधिक है। पर उद्गृहणीय प्राप्त के प्रयोग के लिए प्रावेदन । 15. विभावल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस स्पये प्रधिक है। पर उद्गृहणीय प्राप्त के प्रयोग के लिए प्रावेदन । 16. विभावल प्रवेदन । 17. विभावल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस स्पये प्रधिक है। पर उद्गृहणीय प्राप्त के प्रयोग के लिए प्रावेदन । 18. विभावल प्रवेद के पर पर सारणी 18. विभावल प्रवेद के पर पर सारणी 18. विभावल प्रवेद के पर पर सारणी 18. विभावल पर मूल्य किल तिम्तिखित से प्रधिक उचित फीस नहीं है 18. विभावल पर मूल्य किल तिम्तिखित से प्रधिक उचित फीस नहीं है 18. विभावल पर मूल्य किल तिम्तिखित से प्रधिक उचित फीस नहीं है 18. विभावल पर मूल्य किल तिम्तिखित से प्रधिक उचित पर सारणी	ਵਿਧ	पण:(1) ऋष की रकम,	जिस के ब्रन्त-
उस दिन है जब ऋण को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए प्रावेदन किया जाता है, जहां तक वह रक्षम ग्रमिनिश्चित की जा सकती है। (2) चाहे प्रमाण-पत्न में विनिदिष्ट किसी प्रतिभृति के बारे में कोई ग्रक्ति प्रिवेतियम के ग्रधीन प्रदेश की गई है वहां चाहे वह सप्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह सप्रकार प्रदर्ग करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रति- भूति का मृत्य उसका उस दिन का बाजार मृत्य उसका उस दिन का बाजार मृत्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न से सम्मिलित करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रति- भूति का मृत्य उसका उस दिन का बाजार मृत्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न से सम्मित करने के लिए हो या दोनों प्रयोज ते लिए हो या दोनों प्रयोज ते लिए हो या दोनों प्रयोज ते किए हो या दोनों प्रयोज के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दोनों प्रयोज ते किए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो या दोनों प्रयोजनीं है। हिस्स प्रवाक करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनीं के लिए हो या दोनों है। हो या दोनों प्रयोजनीं के लिए हो या दोनों प्रयोजनीं के लिए हो		र्गत ब्याज स्राता है,	वह रकम है जो
में सम्मिलित करने के लिए ब्रावेदन किया जाता है, जहां तक वह रकम अभिनिश्चित की जा सकती है। (2) चाहें प्रमाण-पत्न में विनिदिष्ट किसी प्रतिभूति के बारे में कोई शक्ति अधिनयम के अधीन प्रदक्त की गई हो या नहीं, और जहां ऐसी शक्ति इस प्रकार प्रदक्त की गई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिभृति का परक्रामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का परक्रामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए ब्रावेदन किया जाता है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए ब्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य अभिनिज्ञत किया जा सकता है। जब रक्तम या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ विषय वस्तु का मूल्य पत्नी पैसे। रुपये से उपकी प्रक्रित प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश अभिवृत्ति ग्री रुप्ति सुधार अधिनियम, 1972 (1974 का 8) की बारा जब ऐसी रकम या मूल्य अपील के जापन 63 के अधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये अधिक है। पर उद्युहणीय आयुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण अधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए आवंदन। बादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्युहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किली निम्निलिखत से अधिक उच्चित फीस नहीं है 2 3 हपये क्षये हपये हपये		उस दिन है जब ऋ	रुण को प्रमाण-पत्न
किया जाता है, जहां तक वह रकम स्रिभिनिश्चित की जा सकती है। (2) चाहे प्रमाण-पद्म में विनिर्दिष्ट किसी प्रतिभागित के बारे में कोई प्रकित अधिनियम के स्रधीन प्रदक्त की गई हो या नहीं, और जहां ऐसी शिक्त इस प्रकार प्रदक्त की गई है वहां चाहे वह प्रकित प्रतिभृति का परक्रामण या स्रिप्त के लिए हो प्रतिभृति का परक्रामण या उसका उस दिन का बाजार मुख्य उसका उस दिन का बाजार मुख्य उसका उस दिन का स्रिप्त का मृत्य उसका उस दिन का स्रिप्त का मृत्य अभिनिश्चित करने के लिए स्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मृत्य प्रभिनिश्चित करने के लिए स्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मृत्य प्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) स्रारेग किए स्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मृत्य प्रभिनिश्चित किया जा सकता है। प्रा द्विमाचल प्रदेश प्रिप्त मि सुधार स्रिप्त के प्रिप्त के स्राप्त के स्रिप्त के स्राप्त के लिए स्रावेदन विषय वस्तु का मृत्य पच्ची पैसे। क्रिप्त के स्राचल प्रदेश के वितीय पच्चीस स्पये प्रधिक है। पर उद्दुष्ट्रणीय स्राप्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण प्रधि- फीस । क्रारिता के स्रस्त किए जाने पर मृत्यानुसारी उद्दुष्ट्रणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मृत्य किन्तु निम्निलिखित से स्रधिक उचित फीस नहीं है 1 2 3 हपवे क्ष्य क्ष्य क्षये ह्या क्षये ह्या स्रप्त क्षये		में सम्मिलित करने	के लिए फ्रावेदन
प्राभीनिश्चित की जा सकती है। (2) नाहें प्रमाण-पन्न में विनिर्दिष्ट किसी प्रतिभृति के बारे में कोई शक्ति अधिनियम के प्रधीन प्रदत्त की गई हो या नहीं, और जहां ऐसी शक्ति हस प्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिभृति पर ब्याज या लाभांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का मृत्य उसका उस दिन का बाजार मृत्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सिम्मलित करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का मृत्य उसका उस दिन का बाजार मृत्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सिम्मलित करने के लिए या बेंदिन किया जाता है जहां तक कि वह मृत्य प्रधिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यायालय) आर्था, जब रक्तम या विवाद प्रस्त दो क्पये पैसठ विषय वस्तु का मृत्य प्रधीनिश्चत किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश अभिधृति और भूमि सुधार अधिक विद्वा प्रधीन किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश अभिधृति और भूमि सुधार अधिक नहीं हैं। 12. हिमाचल प्रदेश अभिधृति और भूमि सुधार अधिक के यथित प्रचीन के ज्ञापन वित्र के प्रथीन के ज्ञापन वित्र के प्रथीन के ज्ञापन वित्र के प्रथीन के लिए आवदन । 12. विद्वा के सिक्त किए आवदन । 13. हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीम रुपये अधिक है। पर उद्युहणीय आयुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण अधि- फीस । 13. हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीम रुपये अधिक है। पर उद्युहणीय आयुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण अधि- फीस । 14. हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीम रुपये अधिक है। पर उद्युहणीय की सो की दरों पर सारणी 15. हिमाचलिवत के अधिक है 15. 20.50		किया जाता है, जा	हों तक वह रकम
किसी प्रतिभूति के बारे में कोई शक्ति श्रिष्ठितयम के प्रधीत प्रदत्त की गई हो या नहीं, और जहां ऐसी शक्ति इस प्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिभृति पर ब्याज या लाभांशा प्राप्त करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रति- भृति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रति- भृति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए श्रावेदन किया जाता है जहां तक िक वह मूल्य श्रीभिण्डित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेग (न्यापालय) हारेश, 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रधीन उच्च न्याया- लथ में उसकी श्रीकारिता के प्रयोज के लिए या हिमाचल प्रदेश के विशेष स्थाप अधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रकम या मूल्य प्रथील के जापन 63 के ग्रधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रीक है। पर उदगृहणीय श्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रीध- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावेदन। वादों के सस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्नलिखित से ग्रिधिक उचित फीस निम्नलिखित से ग्रिक है 2 3 हपये हपये हपये हपये हपये हिपये हिपा प्रतिभिति पर विषय वस्तु का मूल्य हिपये हपये हिपये हिपये हिपये हिपा के स्वित्त की प्रधिक स्वित्त से स्वत्त से स्वित्त से स्वत्त स्वत्त से		ग्रीभनिश्चित की जा	सकती है।
अधिनियम के प्रधीन प्रदत्त की गई हो या नहीं, और जहां ऐसी शक्ति इस प्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह शक्त प्रतिभृति पर ब्याज्य या लाभांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का परक्रामण या अंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का मृत्य उसका उस दिन का बाजार मृत्य उसका उस दिन का प्राण-पत्न से सम्मिलित करने के लिए प्रावदेन किया जाता है जहां तक कि वह मृत्य प्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेश, अब रक्त या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ प्रश्निक के पैराग्राफ 35 के ग्रयीन उच्च ग्याया- विवय वस्तु का मृत्य पच्ची पैसे। इत्ये से अधिक नहीं है। या हिमाचल प्रदेश प्रभिन्न सुधार प्रधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मृत्य अपील के जापन 63 के ग्रधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये प्रधिक है। पर उदगुहणीय प्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रधि- फीस। कारिता हे प्रयोग के लिए न्यावदन। बादों के सिस्त किए जाने पर मृत्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विवयवस्तु का मृत्य किन्तु निम्निलिखित से अधिक उचित फीस नहीं है 1 2 3 हपवे - प्रयोग के लिए न्यावदा किपय क्या क्या किपये सुधक उचित फीस नहीं है हपवे - प्रयोग के लिए न्यावदा किपये क्या किपये क्या किपये क्या किपये क		(2) चाहे प्रमाण-पर	व् में विनिर्दिष्ट
हो या नहीं, श्रौर जहां ऐसी शक्ति इस प्रकार प्रदत्त की गई है वहां चाहे वह शक्ति प्रतिभृति पर ब्याज या लाभांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या श्रंतरण करने के लिए हो ग्रा दिन का परक्रामण या श्रंतरण करने के लिए हो ग्रा दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए स्रावंदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य श्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) ब्रारेण, 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रधीन उच्च न्याया- लिय में उसकी ग्रिष्ठा के श्रिष्ठा के श्रिष्ठा किया वादाग्रस्त दो रुपये पैसठ विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। उत्य से ग्राधिक नहीं है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) ब्रारेण, जब रक्तम या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ विवय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। उपये से ग्राधिक नहीं है। 12. विवय वस्तु का मूल्य पच्ची के श्रिष्ठा के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रिष्ठा है। पर उद्युहणीय प्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रधि- फीस। कोरिता हे प्रयोग के लिए ग्रावंदन। 13. हमाचल प्रदेश को वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रिष्ठा है। पर उद्युहणीय प्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रधि- फीस। कोरिता हे प्रयोग के लिए ग्रावंदन। 14. हमाचल प्रदेश को वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रीक्षेण के जापन विवयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रधिक उचित फीस नहीं है 15. हम्ये रुपये रुपये रुपये रुपये प्रयोग के लिए श्रावंदन हमाचलिखित से ग्रिप्त हमाचलिखित से ग्रिप्त हमाचलिखित से ग्रिप्त हमाचलिखित से ग्रिप्त हमाचलिखित से ग्राप्त हमाचलि		किसी प्रतिभूति के बा	रि में कोई शक्ति
इस प्रकार प्रदश्त की गई है वहां चाहे वह शक्त प्रतिभृति पर ब्याजया लाभांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परकामण या ग्रांतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्र में सम्मिलित करने के लिए ग्रांवरन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य ग्राभितिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) था रेश, जब रक्तम या विवाद।ग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के प्रयोग उचन न्याया-लय में उसकी प्रशास के लिए या हिमाचल प्रदेश प्रभित्त के प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश ग्रांपित को प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश ग्रांपित को प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश को घारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य ग्रांपील के जापन 63 के प्रधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रांपित के पर उदगृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रांपि फीस । कारिता के प्रयोग के लिए ग्रांचदन । वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रांघिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रांघिक है वहीं है 2 3		अधिनियम क ग्रधान	प्रदत्तं की गई
वह णिक्त प्रतिभृति पर ब्याजया लाभांश प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या ग्रंतरण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभृति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्र में सम्मिलित करने के लिए श्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य ग्रंभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) था रेश, जब रक्तम या विवाद।ग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रंथीन उच्च न्याया-लय में उसकी श्रंथिकारिवत के प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश ग्रंभिधृति ग्रोर भूमि सुधार ग्रंथिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य ग्रंपील के जापन 63 के ग्रंथीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रंथिक है। पर उदगृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रंथि-फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रंथिक है नहीं है 1 2 3 हपये कपये रुपये रुपये		हायानहा, ग्रार	गहा एसी शक्ति
प्राप्त करने के लिए हो या प्रतिभृति का परक्रामण या ग्रंतरण करने के लिए हो प्राप्त भाग यो ग्रंतरण करने के लिए हो प्राप्त का परक्रामण या ग्रंतरण करने के लिए हो प्राप्त भूति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभृति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए श्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य ग्रंभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्वापालय) ग्रारेण, जब रक्तम या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रंथीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। व्या हिमाचल प्रदेश अधिकारिता के प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश अधिकारिता के प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश को वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रंथिक है। पर उद्गृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रंधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। वार्बों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किल्तु निम्निलिखित से ग्रंधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रंधिक है नहीं है 1 2 3 हपये क्षये हपये हपय	*	इस प्रकार प्रदत्त का	गइ ह्वहा चाह
परक्रामण या श्रितण करने के लिए हो या दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभूति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलत करने के लिए स्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य श्रिभिनिष्चत किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) श्रारेश, जब रक्तम या विवाद।ग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रयीन उच्च न्याया विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। रुपये से ग्रिधक नहीं है। या हिमाचल प्रदेश अभिधृति ग्रीर भूमि सुधार अधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य ग्रपील के जापन 63 के ग्रधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीम रुपये ग्रिधक है। पर उद्गृहणीय प्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावेदन। वादों के सस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रधिक उचित फीस नहीं है 1 2 3 हपये हपये रुपय		वह शाका प्रातभात पर	ब्याजया लाभाश
होया दोनों प्रयोजनों के लिए हो, प्रतिभूति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने क लिए यावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य ग्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) ग्रारेश, जब रक्तम या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रथीन उच्च न्याया-लथ में उसकी ग्रिक्किशिता के प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश ग्रभिम्निस्चार ग्राधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य ग्रपील के ज्ञापन 63 के ग्रधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रधिक है। पर उद्गृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रधि-फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावेदन। बादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रधिक है 1 2 3 हपये क्षये हपय		प्राप्त भरत के लिए है।	यात्रातभात का राज्य ों ने चिन
भृति का मूल्य उसका उस दिन का बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न में सिम्मिलित करने क लिए यावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य प्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेग (न्यापालय) आरोग, जब रक्तम या विवाद।ग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रंथीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। रुपये में उसकी श्रष्ठिकारिता के प्रयोग के लिए या द्विमाचल प्रदेग अभिधृति ग्रंगैर भूमि सुधार अधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य ग्रंपील के जापन 63 के ग्रंधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रंधिक है। पर उदग्रहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रंधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विवयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्नलिखित से ग्रंधिक उचित फीस नहीं है 1 2 3 रुपये रुपये रुपये 5 0.50		परकामण या अतुरण जो गा दोनों कारीज ने	। करन कालए चे चित्रकोर क ि
बाजार मूल्य है जब प्रतिभूति को प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए यावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य प्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेश, जब रक्तम या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रयीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। लय में उसकी ग्रिष्ठकारिता के प्रयोग के लिए या दिमाचल प्रदेश अभिधृति ग्रीर भूमि सुधार प्रधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य ग्रपील के जापन 63 के ग्रधीन हिमाचल प्रदेश के विद्तीय पच्चीस रुपये ग्रधिक है। पर उदगृहणीय ग्रायुवत के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावेदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रधिक है 1 2 3 हपये कपये रुपय		श्राचा पाना अवाजना भृति कामळा उटक	कालएहा, प्रात-
प्रमाण-पत्न में सम्मिलित करने के लिए प्रावेदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य प्रभिनिष्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेश, जब रक्तम या विवाद।ग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के अधीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। क्यं से अधिक नहीं है। या द्विमाचल प्रदेश अभिधृति और भूमि सुधार अधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य अपील के जापन 63 के अधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये अधिक है। पर उदगृहणीय आयुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण अधि- फीस। कारिता ने प्रयोग के लिए आवंदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से अधिक उचित फीस निम्निलिखित से अधिक है 1 2 3 हपये हपये हपये हपये हपये हपये हपये		बाजार मला है	। उस । ६५ क। नुस्र एति शति को
प्रावदन किया जाता है जहां तक कि वह मूल्य प्रभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेश, जब रक्तम या विवाद।ग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रंथीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। ल्यं में उपकी श्रिकारिता के प्रयोग के लिए या हिमाचल प्रदेश श्रीभधृति श्रीरभूमि सुधार ग्रंथीन श्रीभधृति श्रीरभूमि सुधार ग्रंथीन हिमाचल प्रदेश के विद्तीय पच्चीस रुपये ग्रंथिक है। पर उदगृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रंथि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रंथिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रंथिक है 1 2 3 हपये हपये हपये		प्रमाण-प्रव में मिन्नि	यय प्राप्तमूचिका स्टब्स्टेस्टिन
मृत्य अभिनिश्चित किया जा सकता है। 11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेश, जब रकम या विवाद।ग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रंथीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। लक्ष में उसकी ग्रंधिकारिता के प्रयोग के लिए रुपये से ग्रंधिक नहीं है। या हिमाचल प्रदेश अभिधृति ग्रंभैर भूमि सुधार ग्रंधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रकम या मूल्य ग्रंपील के जापन 63 के ग्रंधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रंधिक है। पर उदगृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रंधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उदगृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रंधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रंधिक है 1 2 3 हपये हपये हपये हपये हपये हपये हपये हपये		ग्रावेदन किया जाता है	जदांतक कि वद
11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) आरेण, जब रक्तम या विवादाग्रस्त दो रुपये पैसठ 1948 के पैराग्राफ 35 के अधीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। लक्ष्म में उसकी प्रिक्षकारिता के प्रयोग के लिए रुपये से अधिक नहीं है। या हिमाचल प्रदेश अभिधृति और भूमि सुधार अधिनयम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रक्तम या मूल्य अपील के जापन 63 के अधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये अधिक है। पर उदग्रृहणीय आयुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण अधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए आवंदन। वादों के सस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उदग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रक्तम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्नलिखित से अधिक उचित फीस निम्नलिखित से अधिक है वहीं है 1 2 3 हपये हपये रुपये रुपय		मल्यं स्रिभिनिश्चित् वि	या जासकता है।
1948 के पराग्राफ 35 के ग्रंथीन उच्च न्याया- विषय वस्तु का मूल्य पच्ची पैसे। लथ में उसकी ग्रंधिकारिता के प्रयोग के लिए ह्यये से ग्रंधिक नहीं है। या हिमाचल प्रदेश ग्रंभिधृति ग्रंभिर भूमि सुधार ग्रंधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रकम या मूल्य ग्रंभील के जापन 63 के ग्रंधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस हपये ग्रंधिक है। पर उदगृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रंधि- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्गृहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रंधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रंधिक है 1 2 3 हपये हपये हपये हपये हपये हपये	11. हिमाचल प्रदेश (न्यापालय) ऋ		(3)
लथ में उसकी श्रिषकारिता के प्रयोग के लिए ह्यये से अधिक नहीं है। या हिमाचल प्रदेश अभिधृति श्रीर भूमि सुधार श्रिष्ठित्यम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रकम या मूल्य ग्रिपील के जापन 63 के श्रिधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रिधिक है। पर उद्गृहणीय श्रियुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रिध-फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रिधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रिधिक है 1 2 3 हपये हपये हपय 5 0.50	1948 के पैराग्राफ 35 के ग्रधीन उच्च		दा १९५४ पस ् जी में
या हिमाचल प्रदेश श्रीभधात श्रीर भूमि सुधार ग्रिष्टिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रकम या मूल्य ग्रिपील के जापन 63 के ग्रिधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रिधिक है। पर उदगृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रिध- फीस । कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावेदन । वादों के सस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रिधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रिधिक है 1 2 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	लय में उसकी अधिकारिता के प्रयोग के	लिए रुपये से अधिक नहीं है।	भा भसा ।
ग्रिधिनियम, 1972 (1974 का 8) की धारा जब ऐसी रकम या मूल्य ग्रिपील के जापन 63 के ग्रिधीन हिमाचल प्रदेश के वित्तीय पच्चीस रुपये ग्रिधिक है। पर उद्गृहणीय ग्रायुक्त के न्यायालय में उसकी पुनरीक्षण ग्रिध- फीस। कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन। बादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रिधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रिधिक है नहीं है 1 2 3 हपये हपय	या हिमाचल प्रदेश ग्राभधीत ग्रीर भीम	संधार '	
अ। युक्त के न्यायालय में उसका पुनराक्षण ग्राध- फास । कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन । वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रिधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रिधिक है नहीं है 1 2 3 हपये हपये 5 0.50	श्रिधिनियम, 1972 (1974 का 8) की	धारा जब ऐसी रकम या मल्य	ਗ਼ਪੀਲ ਕੇ ਚਾਰਕ
अ। युक्त के न्यायालय में उसका पुनराक्षण ग्राध- फास । कारिता के प्रयोग के लिए ग्रावंदन । वादों के संस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रिधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रिधिक है नहीं है 1 2 3 हपये हपये 5 0.50	63 के अधीन हिमाचल प्रदेश के वि	ततीय पच्चीस रुपये ग्रधिक है।	पर उदग्रहणीय
कारिता ह प्रयोग क लिए आवदन । वादों के सस्ति किए जाने पर मूल्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की दरों पर सारणी जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रधिक है नहीं है 2 3 हपये हपये 5 0.50	अ।युक्त क न्यायालय म उसका पुनराक्षण	'श्रधि- फीस ।	१८ उस्कृत्याव
जब रकम या विषयवस्तु का मूल्य किन्तु निम्निलिखित से ग्रधिक उचित फीस निम्निलिखित से ग्रधिक है नहीं है 1 2 3 हपये हपये हपय — 5 0.50	कारिता के प्रयोग के लिए स्रावंदन ।		
निम्नलिखित से ग्रिधिक है नहीं है 1 2 3 हपये हपय 5 0.50	वादों के संस्ति किए जाने पर म	ह्त्यानुसारी उद्ग्रहणीय फीसों की	दरों पर सारणी
निम्नलिखित से ग्रिधिक है नहीं है 1 2 3 हपये हपय 5 0.50	जब रकम या विषयवस्तु का मुल्य	किन्त् निम्नलिखित से ग्रधिक	उचित फीस
1 2 3 हपये हपय — 5 0.50	निम्नलिखित से ग्रधिक है		= 1 - 2 - 141 ZI
5 0.50		5000	3
5 0.50	रुपये	 रुपये	 ਨਹਸ
=			
	5		1.00

ग्रमाधार्ण	राजपत्न, हिमाचल प्रदेश	ा, 24 नवम्बर, 1990/3 अग्रहा	यण, 1912 2319
1		2	3
रुपय		ह्यये	<u> </u>
10		15	1.50
1 5	F3	20	2.00
20		25	2.50
25		30	3.00
30		35	3.50
35		40	4.00
40		45	4.50
45		50	5.00
50		5 5	5.50
5 5		60	6.00
60		65	6.50
6 5		7 U	7.00
70		75	7.50
75		80	8.00
80		85	8.50
85		90	9.00
90		95	9.50
95		100	10.00
100		110	11.00
110		120	12.00
120		130	13.00
130		140	14.00
140		150	15.00
150		160	16.00
160		170	17.00
170		180	18.00
180		190	19.00
190		200	20.00
200		210	21.00
210		220	22.00
220		230	23.00
230		240	24.00
240		250	25.00
250		260	26.00
260		270	27.00
270		280	28.00
280		290	29.00
290		300	30.00
300		310	31.00
310		320	32.00
320	2 22	330	33.00
330		340	34.00
340		350	35.00
350	·	360	36.00

	2	3
<u> </u>	रुपये	रुपये
हपय	370	37.00
360	380	38.00
370	390	39.00
380	400	40.00
390	410	41.00
400	420	42.00
4 1 0	430	43.06
420	440	44.00
430	450	45.00
440		46.00
450	460	47.00
460	470	48.00
470	480	49.00
480	490	500
490	500	76.0
500	510	78.0
510	520	79.5
520	530	81.0
530	540	8 2. 5
540	550	84.0
550	560	85.5
560	570	87.0
5 7 0	580	88.5
580	590	90.0
5 9 0	600	91.5
600	610	9 1. 3
610	620	
620	630	94.5
630	640	96.0
640	650	97.5
650	660	99.0
660	670	100.5
670	680	102.0
680	690	103.5
690	700	105.0
700	710	106.
710	720	108.
720	730	109.
730	740	1 1 1.0
740	750	1 1 2.
740 750	760	114.
	770	1 1 5.
760	780	117.
770 780	790	118.

1	2	3
रुपये	रुपये	रुपये
790	800	120.00
800	810	121.50
810	820	12300
820	830	124.50
830	840	126.00
840	850	127.50
850	860	129.00
860	870	130.50
870	880	132.00
880	890	133.50
890	900	135.00
900	910	136.50
910	920	138.00
920	930	139.50
930	940	141.00
9'40	950	142.50
950	960	145.00
960	970	145.50
970	980	147.00
980	990	148.50
990	1000	150.00
1000	1100	162.20
1100	1200	174.40
1200	1300	186.60
1300	1400	198.80
1400	1500	211.00
1500	1600	223.20
1600	1700	2 35.40
1700	1800	247.60
1800	1900	259.80
1900	2000	272.00
2000	2100	284.20
2100	2200	296.40
2200	2300	308.60

1	2	3
 रुपये	रुपये	रुपये
2300	$\mathbf{2400}$	320.80
2400	2500	333.00
2500	2600	345.20
2600	2700	357.40
2700	2800	369.60
2800	2900	381.80
2900	3000	394.00
3000	3100	406.20
3100	3200	418.40
3200	3300	430.60
3300	3400	442.80
3400	3500	455.00
3500	3600	467.20
3600	3700	479.40
3700	3800	491.60
3800	3900	503.80
3900	4000	516.00
4000	4100	528.20
4100	4200	540.40
4200	4300	552 .60
4300	4400	564.80
4400	4500	577.00
4500	4600	589.20
4600	4700	601.40
4700	4800	613.60
4800	4900	625.80
4900	5000	638.00
5000	5250	662.40
5250	5500	686.80
5500	5750	711.20
5750	6000	735.60
6000	6250	760.00
6250	6500	784.40
6500	6750	808.80

. 1	2	3
	म्पये	रुपये
6750	7000	833.20
7000	7250	857.60
7250	7500	882.00
	7750	906.40
7500	8000	93 0.80
7750		955.20
8000	8250	979.60
8250	8500	1004.00
8500	8750	
8750	9000	1028.40
9000	9250	1052.80
9250	9500	1077.20
9500	9750	1101.60
9750	10000	1126.00
**************************************	10500	1162.50
10000		1199.00
10500	11000 11500	1235.50
11000	12000	1272.00
1 1 5 0 0 1 2 0 0 0	12500	1308.50
12500	13000	1345.00
13000	13500	1381.50
13500	14000	1418.00
14000	14500	1 454.50
14500	15000	1491.00
15000	15500	1527.50
15500	16000	1564.00 1600.50
16000	16500	1637.00
16500	17000	1673.50
17000	17500	1710.00
17500	18000	1746.50
18000	18500	1783.00
18500	19000 19500	1819.50
19000	2000	1856.00
19500	21000	1904.80
20000	22000	1953.60
21000 22000	23000	2002.40
23000	21.00.00 00.000.00 00.000.00 00.000	2051.20
24000	25000	2100.00

1	2	3
रुपये		रूपये
25000	26000	2148.80
26000	27000	2197.60
27000	28000	2246.40
28000	29000	2295.00
29000	30000	2344.00
30000	32000	2392.80
32000	34000	2441.60
34000	36000	2490.40
36000	38000	2539.40
38000	40000	2588.00
40000	42000	2636.80
42000	44000	2685.60
44000	46000	2734.40
46000	48000	2783.20
48000	50000	2832.00
50000	55000	2880.80
55000	60000	2929.60
60000	65000	2978.40
65000	70000	3027.20
70000	75000	3076.00
75000	80000	3124.80
80000	85000	3173.60
85000	90000	3222.40
90000	95000	3271.20
95000	100000	3320.00
100000	105000	3368.80
105000	110000	3417.60
110000	115000	3466.40
115000	120000	3515.20
120000	125000	3564.00
125000	130000	3612.80
130000	135000	3661.60
135000	140000	3710.40
140000	145000	3759.20
145000	150000	3808.00
150000	155000	3856.80
155000	160000	3905.60
160000	165000	3954.40
165000	170000	4003.20
170000	175000	4052.00
175000	180000	4100.80
	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	4100.00

ग्रसाधारण राजपत्न,	हिमाचल प्रदश, 24 नवस्वर,	1990/3 अवहायण,	1912 2323
1	2	·	3
रुपये	स्पये		रुपय
180000	185000		4149.60
185000	190000		4198.40
190000	195000		4247.20
195000	200000		4296.00
200000	205000		4344.80
205000	210000		4393.60
210000	215000		4442.40
215000	220000		4491.20
220000	225000		4540.00
225000	230000		4588.80
230000	235000		4637.60
235000	240000		4686.40
240000	245000		4735.20
245000	250000		478400
250000	255000		4832.80
255000	260000		4881.60
260000	265000		4930.40
265000	270000		4979.20
270000	275000		5028.00
275000	280000	337	5076.80
280000	285000		5125.60
285000	290000	•	5174.40
290000	295000	•	5223.20
295000	300000		5272.00
300000	305000		5320.80
305000	310000	*. ***********************************	5369.60
310000	315000		5418.40
315000	320000		5467.20
320000	325000	5.003	5516.00
325000	330000		5564.80
330000	335000	•	5613.60
335000	340000		5662.40
340000	345000		5711.20
345000	350000		5760.00
350000	355000		5808.80
355000	360000	P.#1.02	5857.60
360000	365000		5906.40
365000	370000		5955.20
370000	375000		6004.00
375000	380000		6052.80
380000	385000		6101.60
385000	390000	g dang a menang	6150.40
390000	395000		6199.20
395000	400000	27	6248.00
<del></del>			

श्रौर जब विषय-वस्तु की रकम या मूल्य 4,00,000 रुपये (चार लाख रुपये) से प्रधिक है तो 6,248 (छ: हजार दो सौ अडतालीस रुपये) के अतिरिक्त 4,00,000 रुपये (चार लाख रुपये) से अधिक प्रत्येक पांच हजार रुपये या उसके भाग के लिए अड़तालीस रुपयं श्रस्सी पैसे, उचित उदग्राहय फीस होगी।

### श्रन्सूची-2

(धारा 3 देखें)

संख्यांक

नियत फीसें

उचित फीस

3

वह सरकार से व्यवहार रखने वाले ] 1. श्रावंदन या किसी व्यक्ति द्वारा सीमा-शुल्क या आबकारी विभाग के किसी ऋधिकारी को या किसी मैजिस्ट्रेट को पेश की जाती है, भ्रौर जब विषय-वस्त् या आवेदन अनन्यतः उस व्यवहार के संबंध में है ;

> या जब वह सीधे सरकार से किए गए वचन-बंध के ग्रधीन ग्रस्थाई तौर पर व्यवस्थापित भूमि के धारक व्यक्ति द्वारा भू-राजस्व के किसी अधिकारी को पेश की जाती है, ग्रोर जब ग्रावेदन या ग्रर्जी को विषय वस्त् अनन्यतः उस बचनबद्ध के संबंध में है;

या जब वह किसी नगरपालिका आयुक्त को किसी स्थान की मफाई या स्थार के लिए तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के ग्रधीन पेश की जाती है यदि ग्रावेदन या अर्जी ऐसी सफाई या सुधार के संबंध में ही है;

या जब वह ग्रारम्भिक ग्रिधकारिता वाले प्रयास सिविल न्यायालय से भिन्न किसी सिविल न्यायालय में या प्रान्तीय लघ्वाद न्यायालय ग्रधिनियम, 1887 (1887 का 9) की धारा 5 के स्रधीन स्थापित किसी लघ्वाद न्यायालय में या कलक्टर या राजस्व के ग्रन्य अधिकारी को किसो ऐसे वाद या मामले के संबंध में पेश की जाती है जिसकी रकम या विषय-वस्त् का मूल्य पचास रुपये से कम है;

या जब वह किसी सिविल, दाण्डक या राजस्व न्यायालय में किसी बोर्ड में या किसी कार्य-पालक अधिकारी को ऐसे न्यायालय बोर्ड या अधिकारी द्वारा पारित किसी निर्णय, डिकी या ग्रादेश की या ऐसे न्यायालय या कार्यालय के अभिलेख की किसी अन्य दस्तावेज की प्रतिलिपि या अनुवादं अभिप्राप्त करने के लिए पेश की जाती है।

चालीस पैसे ।

(ख) जब उसमें ऐसे अपराध से भिन्न, जिसके ] लिए पुलिस अधिकारी दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898 (1898 का 5) के अधीन विना वारन्ट के गिरफ्तार कर सकते हैं, किसी ग्रपराध का परिवाद या ग्रारोप अन्तर्विष्ट है, ग्रौर वह किसी दण्ड न्यायालय में पेश की जाती है;

यां जब वह सिविल, दाण्डिक या राजस्व न्यायलय में या किसी राजस्व अधिकारी के यहां जिसकी अधिकारिता कलक्टर की अधिकारिता के बराबर या अधोनस्य है, या किसी मैजिस्ट्रेट के यहां उमकी कार्यपालक है सियत में पेश > एक रुपया की जाती है, और उसके लिए इस पिधिनियम द्वारा अन्यथा विचीम पैसे। उपबंधित नहीं है;

या जब वह न्यायालयमें राजस्व या भाटक का निक्षेप करने के लिए, या न्यायालय द्वारा भू-स्वामी से अपने श्रिभधारी को संदत्त किए जाने वाले प्रतिकर की रकम के ग्रवधारण के लिए है;

- (ग) जब वह मुख्य नियंत्रक राजस्व या कार्य-पालक प्राधिकारी, या राजस्व या सिकट के श्रायुक्त के यहां या मण्डल के कार्यपालक प्रशासन के भारसाधक किसी मुख्य अधिकारी के यहां पेश की जाती है और उसके लिए इस ग्रधिनियम द्वारा अन्यथा उपबन्ध नहीं किया गया है।
  - (घ) जब वह उच्च न्यायालय में पेश की, जाती है:--
    - (i) कम्पनी अधिनियम, 1956(1956 का 1) के अधीन कम्पनी के परिसमापन के लिए ;

दो सौ साठ रुपये ।

(ii) उसी अधिनियम के अधीन कोई अन्य न्यायिक कार्रवाई, करने के लिए;

तरह रुपय पचास रुपये

(iii) बन्दी प्रत्यक्षीकरणं भ्रजियों भ्रौर दाण्डिक प्रित्रया से उत्पन्न होन वाली ऋजियों से भिन्न के लिए संविधान के अनुच्छद 226 के अधीन ;

(iv) सभी अन्य मामलों में।

दो रुपये पैंसठ

2. किसी सिविल न्यायालय में यह भ्रावेदन कि भ्रत्य त्यायालय से अभिलेख मंगाए जाएं।

जब न्यायालय आवेदन मंजूर कर लेता है और उस उसकी राय में ऐसे अभिलेखों के परीक्षण में डाक का पर इस अनुसची 1 उपयोग अन्तर्विलित है। क खण्ड

(酉) खण्ड या खण्ड

ग्रधीन उद्गृहीत

फीस के ग्रातिरिक्त एक रुपया।

3. ग्रिकिचन के तौर पर वाद लाने की इजाजत के लिए ग्रावेदन ।

एक रूपया पच्चीस पैसे ।

- 4. अकिचन के तौर पर अपील करने की इंजाजत के लिए आवेदन।
- (क) जब वह जिला न्यायालय में पेश की जाती है।
- (ख) जब वह आयुक्त के यहां या उच्च न्यायालय में पेश की जाती है।

पच्चीस पसे। दो रुपये पैसठ पैसे।

रुपया

5. अधिभोग के अधिकार को साबित करन के लिए वाद-पत्न या अपील का ज्ञापन । एक रुपया पच्चीस पैसे।

6. दण्ड प्रिक्रिया संहिता, 1898 (1898 का 5) या सिविल प्रिक्रिया संहिता, 1908 (1908 का 5) के अधीन न्यायालय या मिजिस्ट्रेट द्वारा किए गए आदेश के अनुसरण में दिया गया जमानतनामा या बाध्यता की अन्य लिखित जिसके लिए इस अधि-नियम द्वारा अन्यथा उप-बंधित नहीं है।

पेंसठ पैसे

7. भारतीय विघाह विच्छेद अधिनियम, 1869 (1869 का 4) की धारा 49 के अधीन परिवचन ।

एक रुपया पच्चीस पसे।

8. म्हतारनामा या वकालत नामा

जब वह किसी एक मामले के संचालन के लिए--

(क) उच्च न्यायालय से भिन्न किसी एक रुपया । सिविल या दण्ड न्यायालय में पच्चीस पैसे। या किसी कलक्टर या मिजिस्ट्रेट या अन्य कार्यपालक अधिकारी के यहां, जो उनसे भिन्न है जो इस संख्यांक के खण्ड (ख) और

- (ग) में विणित है, पेश किया जाता है।
- (ख) राजस्व, सर्किट या सीमा-शुल्क एक रूपया के अध्यक्त के यहां या मण्डल के पच्चीस पैसे। कार्यपालक प्रशासन के भारमाधक अधिवारी के यहां, जो मुख्य राजस्व या कार्यपालक प्राधिकारी नहीं है, पेश किया जाता है।
- (ग) उच्च न्यायालय, राजस्व बोर्ड या दो रूपये अन्य मुख्य नियन्त्रक राजस्व या पैंसठपैसे। कार्यपालक प्राधिकारी के यहां पेश किया जाता है।
- 9. अपील का जापन जब वह अपील डिकी के या डिकी का बल रखने वाले आदेश के विरुद्ध नहीं है, और वह पेश किया जाता है।
- (क) उच्च न्यायालय से भिन्न किसी सिविल एक रुपया न्यायालय या उच्च न्यायालय ग्रथवा पुख्य नियन्त्रक राजस्व या कार्यपालक प्राधिकारी से भिन्न किसी राजस्व न्यायालय म या कार्यपालक ग्रधिकारी के यहां।
- (ख) उच्च त्यायालय में या मुख्य नियत्वक पांच रुपये कार्यपालक या राजस्व प्रधिकारी के पच्चीस पैसे। के यहां।

10. केवियट

छह रुपये पच्चास पैसे।

11. संपरिवर्ती विवाह विघटन ग्रिधिनियम, 1866 (1866 का 21) के ग्रिधीन वाद में ग्रर्जी।

छह रुपये पच्चास पैसे।

12. विशेष विवाह स्रधिनियम, 1954 (1954 का 43) या हिन्दू विवाह स्रधिनियम, 1955 (1955 का 25) के स्रधीन प्रत्येक प्रजी या स्रावेदन स्रथवा जापन या स्रपील।

उन्नीस रुपये पच्चास पैसे ।

3

- 13. निम्नलिखित वादों में से हर एक में वादपत्न या अपील:--
  - (i) ऐसे सिविल न्यायालयों में से जो लटर्ज पेटेण्ट हारा स्थापित नहीं है किसी का या किसी शाजस्व न्यायालय का संक्षिप्त विनिष्चय या आदेश परिवर्तित या अपास्त कराने के के लिए वाद;

(ii) राजस्व संदायों संपदाग्रों के स्वामियों के नामों के राजस्टर में की कोई प्रिविध्य परिवर्धित प्रविध्य परद्द करने के लिए वाद ;

(iii) घोषणात्मक डिकी ग्रिभिप्राप्त करने के लिए वाद, जहां कोई पारिणामिक अनुतोष प्राथित नहीं है;

(iv) पंचाट श्रपास्त करान के लिए वाद;

(v) दत्तक ग्रहण ग्रपास्त कराने के लिए वाद;

- (११ं) हर ग्रन्य वाद जिसमें विवादग्रस्त विषय-वस्तु का मूल्य धन के रूप में प्राक्किति करना संभव नहीं है ग्रौर जिसके लिए इस ग्रिधिनियमद्वारा ग्रन्यथा उपबन्धित नहीं है।
- 14. भारतीय मध्यस्थम ग्रिध-नियम, 1940 (1940 का 10) की धारा 20 के ग्रिधीन ग्रावेदन ।

उन्नीस रुपय पच्चास पैसे।

तेरह रुपये

2.

तेरह रुपये

15. सिविल प्रिक्तिंग संहिता, 1908 (1908 का 5) के अधीन न्यायालय की राय के लिए प्रकृत का कथन करने वाला लिखित करार ।

16. भारतीय विवाह विच्छेद अधिनियम, 1869 की धारा 44 के अधीन अधीन अधिनियम के अधीन हर अर्जी औष धारा 55 के अधीन हर अधीन हर

उनतालीस रुपये ।

17. पारसी मैरिज एण्ड डाईवोर्स ऐक्ट, 1936 (1936 का 3) के श्रधीन वादपत्र या श्रपील का जापन।

जापन

उनतालीम रुपये।

18. हिमाचल प्रदेश रुढ़िगत विधि के अधीन पैतृक भूमि के अन्य संक्रामण के बारे में घोषणा के लिए उत्तरभोगी द्वारा बाद के वादपत्र या अपील का ज्ञापन ।

उन्नीस' हपये पच्चास पैसे ।

19. हिमाचल प्रदेश में यथा
प्रवृत्त ईस्ट पंजाब ग्रबंन
रैन्ट रैसट्रिक्शन ऐक्ट,
1949 (1949 का 3)
के ग्रधीन राहत के लिए
ग्रावंदन या ग्रपील का

तेरह रूपये

20. बैंककारी विनियमन ग्रिध- (क) जहां रकम 2,500 रुपये से ग्रिधिक उन्नीस रुवये नियम, 1949 (1949 का नहीं है। पञ्चास पैसे। 10) के ग्रिधीन धन (चाहे (ख) जहां रकम 2500 रुपये से ग्रिधिक उनतालीम प्रितिभूत या ग्रिपिन्त हैं किन्तु 10,000 रुपये से ग्रिधिक रुपय। के लिए दावे या ऐसे हैं नहीं है। दावों या प्रति दावों क

- विरुद्ध किए गए मुजरा के (ग) जहां रकम 10,000 रुपये से अधिक पैंसठ लिए दावा।
- (क) जहां रकम 5000 रुपये से अधिक 21. बैंककारी विनियमन है किन्तु 10,000 रुपये से अधिक श्रधिनियम, 1949 (1949 का 10) को नहीं है उपबन्धों से ग्रौर के प्रधीन (ख) जहां रकम 10,000 रुपये से श्रधिक एक सो तीस पारित स्रादेश या विनि-रुपये। है श्चय से अपील का जापन ।

### भ्रन्स्ची-3

## (धारा 27 देखें)

मूल्यांकन का प्ररूप (अवश्यक परिवर्तनों सहित, यदि कोई हो, प्रयोग में लाया जाए) ....के न्यायालय में मृत्तक.....की विल के प्रोबेट (या की संपत्ति ग्रौर उधारों के प्रशासन के मामले में)

- मैं..... मत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञान/शपथ लेता हूं भ्रौर एक या का निकटतम कुल्य हूं ग्रौर मैंने इस शपथपत्न के उपाबन्ध "ग्र" में वह सब सम्पत्ति और उधार सही तौर पर उपवर्णित कर दिए हैं जिन पर मृत्तक अपनी मृत्यु के समय कब्जा रखता था या हकदार था और जो मेरे हाथों में भ्रा गए हैं या स्राने संभाव्य हैं।
- 2. मैं यह भी कहता हूं कि मैंने उपाबन्ध "श्रा" में वे सब महें सही तौर पर उपवर्णित कर धी हैं जिन्हें काटने के लिए मैं विधि द्वारा अनुज्ञात हूं।
- 3. में यह भी कहता हूं कि उक्त ग्रास्तियों, केवल ग्रन्तिम वर्णित मद्दों को समिनलित न करते हुए, किन्तु उक्त मृत्तक की मृत्युतारीख से मब भाटकों, ब्याज, लाभाशों श्रौर बढ़े हुए मुल्यों को सम्मिलित करते हुए, निम्निलिखित से कम मूल्य की है--

### उपाबन्ध "श्र"

### मत्तक की जंगम श्रीर स्थावर सम्पत्ति का मूल्यांकन

रुपयं

घर में तथा बैंकों में नकद, घर गृहस्थी का सामान, पहनने के वस्त्र, पुस्तकें, सोना चांदी, रत्न ग्रादि (निष्पादक या प्रशासक के सर्वोत्तम विश्वास के ग्रनुसार प्राक्कलित मूल्य लिखए)

सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में सम्पत्ति जो लोक ऋण कार्यालय में ग्रन्तरणीय है (उसका वर्णन ग्रोर उस दिन की कीमत के हिसाब से मूल्य निखिए, ग्रावदन करने के समय तक गणना करके ब्याज भी ग्रलग निखिए)

स्थावर सम्पत्ति अर्थात्—

(गृहों की दशा में निर्धारित मूल्य, यदि कोई हो, ग्रौर उन वर्षों की संख्या जितनों के निर्धारण पर बाजार मूल्य प्राक्कलित किया गया है, ग्रौर भूमि की दशा में उसका क्षेत्रफल, बाजार मूल्य ग्रौर सब प्रोद्दभूत भाटक दिखाते हुए, वर्णन लिखिए)

### पट्टाधृत सम्पत्ति

रुपये

(यदि मृत्तक कुछ वर्षों के उपरांत पर्यवसेय पट्टाधारण करता था तो मृत्यु की नारीख़ को शोध्य बकाया और उस तारीख़ से आवेदन करने की तारीख़ तक प्राप्त था शोध्य भाटक पृथक दिखाते हुए लिखिए कि कितने वर्षों के भाटक के बराबर लाभ-भाटक प्राक्कित किया गया है)

सार्वजनिक कंपनियों में सम्पत्ति

(विशिष्टियां और उस दिन की कीमत की दर से गणना करके मूल्य लिखिए, ब्याज आवेदन करने के समय तक गणना करके पृथक लिखिए)

जीवन बीमा पालिसी, बंधक या ग्रन्य प्रतिभूतियों में, जैसे बंधपत्रों, बंधकों, विनिमयपत्रों, वचनपत्रों ग्रौर धन की ग्रन्य प्रतिभूतियों में लगा हुग्रा रुपया।

(सब को मिलाकर रकम लिखिए, ब्याज पृथकत: आवेदन करने के समय तक गणना करके लिखिए)

वहीं ऋण--(डूबन्त से भिन्न) व्यापार स्टाक--(प्राक्कलित मूल्य, यदि कोई हो, लिखिए) ग्रन्य सम्पत्ति जो पूर्वगामी शीर्षों में नहीं ग्राई है) (प्राक्कलित मूल्य, यदि कोई हो, लिखिए)

योग......

### उपाबन्ध "श्रा"

रुपये

# ऋण ग्राबि की ग्रनुसूची

मृत्तक से शोध्य श्रौर उसके द्वारा देय ऋणों की रकम, जो विधि के श्रनुसार संपदा में से संदेय है।

म्रत्येष्टि व्यय की रकम
वन्धक-विल्लंगमों की रकम
बिना फायदाप्रद्रहित ग्रौर बिना फायदाप्रद हित प्रदत्त करन की साधारण शक्ति क न्यासतः धारित सम्पत्ति ग्रन्य सम्पत्ति जिस पर शुल्क उद्ग्रह्णीय नहीं है